MVS FOUNDATION

FREE NOTES

# HISTORY (315)

## CHAPTERWISE NOTES

# HISTORY

| Sl. No. | Module | Chapters (Public Examination) | Marks |
|---|---|---|---|
| **1** | **Module 1 :** Ancient India | L-3. The Harappan Civilization<br>L-4. The Vedic Age (1500 BC-600BC)<br>L-6. Post Mauryan Developments<br>L-7. The Guptas and Their Successors | 20 |
| **2** | **Module 3 :** Modern India | L-16. Establishment of British rule in India till 1857<br>L-18. Social changes<br>L-19. Popular resistance to company rule | 15 |
| **3** | **Module 4 :** National Movement | L-20. Nationalism<br>L-21. National Movement & Indian Democracy | 15 |

| Component | Details | Marks |
|---|---|---|
| **Public Exam (Selected Modules 1,3,4)** | Total Chapters : 9 | 50 |
| **Practical Exam** | NA | 0 |
| **TMA** | Tutor Marked Assignment | 20 |
| **Final Possible Marks** | | **70 Marks** |

# विषय- सूची


| | |
|---|---|
| **1** | हड़प्पा सभ्यता |
| **2** | वैदिक काल (1500BC–600BC) |
| **3** | मौर्योत्तर काल |
| **4** | गुप्तवंश तथा उनके उत्तराधिकारी (A.D.300–750) |
| **5** | भारत में ब्रिटिश शासन का संस्थापन 1857 तक |
| **6** | आधुनिक भारत में सामाजिक परिवर्तन |
| **7** | कंपनी शासन का जन विरोध |
| **8** | राष्ट्रवाद |
| **9** | भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन |

# 1

# हड़प्पा सभ्यता

## परिचय

हड़प्पा सभ्यता, जिसे सिंधु घाटी सभ्यता के नाम से भी जाना जाता है, भारत की प्रथम नगरीय सभ्यता थी। इसका विकास ताम्र-पाषाण युग के दौरान हुआ और यह अपनी उन्नत नगर-योजना, आर्थिक समृद्धि तथा सुव्यवस्थित सामाजिक जीवन के लिए जानी जाती है।

## हड़प्पा सभ्यता का अर्थ

1. हड़प्पा सभ्यता भारतीय उपमहाद्वीप की एक प्राचीन नगरीय सभ्यता थी।
2. यह **2600 ईसा पूर्व – 1900** ईसा पूर्व के मध्य फली-फूली।
3. इसे हड़प्पा कहा जाता है क्योंकि हड़प्पा पहला खोजा गया स्थल था।
4. इसका विकास **ताम्र-पाषाण काल** (पत्थर और ताँबे के औजारों का उपयोग) में हुआ।
5. हमारे ज्ञान का आधार पुरातात्विक साक्ष्य हैं, क्योंकि इसकी लिपि अभी तक पढ़ी नहीं जा सकी है।

## उद्गम और विस्तार

### उद्गम

1. हड़प्पा सभ्यता का विकास पूर्ववर्ती नवपाषाण ग्रामीण संस्कृतियों से धीरे-धीरे हुआ।
2. कृषि में सुधार से अधिशेष उत्पादन हुआ।
3. अधिशेष अन्न ने कारीगरों और व्यापारियों जैसे गैर-कृषि लोगों का भरण-पोषण किया।

### हड़प्पा सभ्यता के चरण

**1. प्रारम्भिक हड़प्पा चरण (3500–2600 ईसा पूर्व)**

- मिट्टी के ढाँचे
- व्यापार और शिल्प की शुरुआत

**2. परिपक्व हड़प्पा चरण (2600–1900 ईसा पूर्व)**

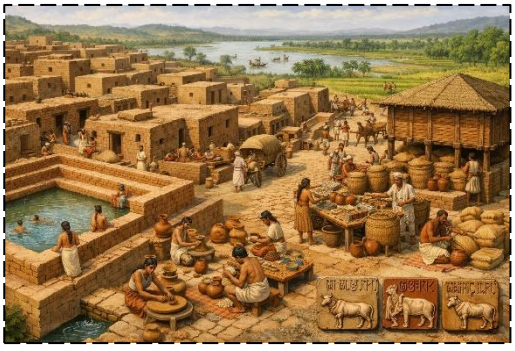

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

- पूर्ण विकसित नगरीय केंद्र
- पकी हुई ईंटों के मकान, जल-निकास व्यवस्था, विदेशी व्यापार

**3. उत्तर हड़प्पा चरण (1900–1400 ईसा पूर्व)**

- नगरों का पतन
- नगरीय विशेषताओं का लोप

## विस्तार

1. इसका विस्तार वर्तमान **भारत, पाकिस्तान और अफगानिस्तान** तक था।

2. भारत के प्रमुख क्षेत्र: पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र और पश्चिमी उत्तर प्रदेश।

3. **प्रमुख स्थल:** हड़प्पा, मोहनजोदड़ो, कालीबंगन, लोथल, धौलावीरा, राखीगढ़ी, बनावली।

4. **हड़प्पा–कालीबंगन–मोहनजोदड़ो क्षेत्र इसका मुख्य केंद्र था।**

## नगर-योजना

1. **नगर दो भागों में विभाजित थे:**
   - पश्चिमी भाग में **दुर्ग (गढ़)**
   - पूर्वी भाग में **निचला नगर**

2. सड़कों का निर्माण ग्रिड-पद्धति में किया गया था, जो एक-दूसरे को समकोण पर काटती थीं।

3. मकान **पकी हुई ईंटों** से बनाए गए थे।

4. बड़े मकानों में आँगन, कुएँ, रसोईघर और स्नानघर होते थे।

5. ढकी हुई नालियों और मैनहोल सहित सुव्यवस्थित **जल-निकास व्यवस्था** थी।

## हड़प्पा नगरों के कुछ प्रमुख स्थापत्य अवशेष

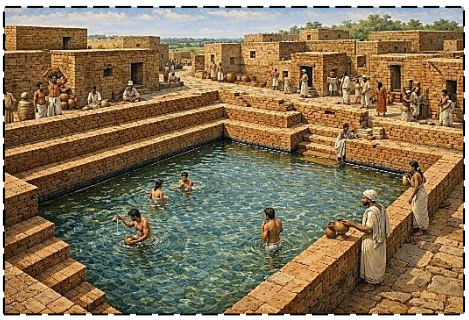

### 1. विशाल स्नानागार (मोहनजोदड़ो)

- धार्मिक स्नान के लिए उपयोग
- धार्मिक स्नान के लिए उपयोग

### 2. अन्नागार (हड़प्पा और मोहनजोदड़ो)

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

अनाज भंडारण के लिए उपयोग

**3. गोदी-बाड़ा (लोथल)**

- जहाज़ों को ठहराने के लिए उपयोग
- समुद्री व्यापार का संकेत

**आर्थिक क्रिया-कलाप**

**(i) कृषि**

1. कृषि और पशुपालन अर्थव्यवस्था का आधार थे।
2. **मुख्य फसलें: गेहूँ, जौ, सरसों, तिल, मटर।**
3. चावल के प्रमाण लोथल और रंगपुर से मिले।
4. कपास उगाई जाती थी और बुना हुआ वस्त्र उपयोग में लाया जाता था।
5. सिंचाई कुओं और नदी-नालों के माध्यम से की जाती थी।

**(ii) उद्योग और शिल्प**

1. उपयोग की जाने वाली धातुएँ: सोना, चाँदी, ताँबा और काँसा (लोहा अज्ञात था)।
2. प्रसिद्ध कलाकृति: मोहनजोदड़ो से प्राप्त **काँसे की नर्तकी।**
3. प्रमुख शिल्प: मनका-निर्माण, मृद्भांड-निर्माण, मुहर-निर्माण।
4. मुहरें सेलखड़ी (स्टियाटाइट) से बनी होती थीं और प्रायः चौकोर आकार की थीं।

**(iii) व्यापार**

1. आंतरिक और बाह्य दोनों प्रकार का व्यापार था।
2. **मेसोपोटामिया** के साथ व्यापारिक संबंध थे।
3. व्यापार मार्ग ओमान और बहरीन से होकर गुजरते थे।
4. निर्यात में मनके, हाथीदाँत, शंख और लैपिस-लाजुली शामिल थे।
5. निर्यात में मनके, हाथीदाँत, शंख और लैपिस-लाजुली शामिल थे।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

## सामाजिक विशिष्टताएं

1. हड़प्पा समाज को **मातृसत्तात्मक** माना जाता है।
2. विभिन्न व्यवसाय थे जैसे पुजारी, व्यापारी, कारीगर और श्रमिक।
3. मकानों के आकार से सामाजिक असमानता का पता चलता है।
4. वस्त्र **कपास और ऊन** से बनाए जाते थे।
5. लोग सोने, चाँदी और मिट्टी (टेराकोटा) के आभूषण पहनते थे।

## धार्मिक विश्वास और प्रथाएँ

1. हड़प्पावासी प्रकृति-पूजक थे **(जीववाद)।**
2. **मातदेवी की पूजा** प्रचलित थी।
3. **पशुपति** (आदि-शिव) की मुहर पर पुरुष देवता का चित्र है।
4. वृक्ष-पूजा, पशु-पूजा और अग्नि-पूजा प्रचलित थीं।
5. दफन संस्कारों से मृत्यु के बाद जीवन में विश्वास का संकेत मिलता है।

**मातदेवी**

## लिपि

**1.** हड़प्पावासी साक्षर थे।

**2.** लिपि में लगभग **400 चिह्न** थे।

3. इसे **दाएँ से बाएँ** लिखा जाता था।
4. लिपि अभी तक पढ़ी नहीं जा सकी है।

## हड़प्पा सभ्यता का पतन

1. प्राकृतिक आपदाएँ जैसे बाढ़ और भूकंप।
2. घग्गर-हकरा जैसी नदियों का सूख जाना।
3. जलवायु परिवर्तन और शुष्कता में वृद्धि।
4. आर्य आक्रमण सिद्धांत को अस्वीकार किया गया है।
5. पतन अचानक नहीं बल्कि क्रमिक था।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

## गैर-हड़प्पा भारत की ताम्र-पाषाण समुदाय

1. प्रमुख संस्कृतियाँ: बनास, कायथा, मालवा और जोरवे।
2. ये संस्कृतियाँ ग्रामीण प्रकृति की थीं।
3. मिट्टी के मकान और पत्थर-ताँबे के औजार उपयोग में लाए जाते थे।
4. कृषि और पशुपालन मुख्य व्यवसाय थे।

# TOP 5 QUESTIONS

**प्रश्न-1. हड़प्पा नगर-योजना की मुख्य विशेषताओं का वर्णन कीजिए।**

**उत्तर-** हड़प्पा नगर सुव्यवस्थित थे। नगरों को दुर्ग और निचले नगर में विभाजित किया गया था। सड़कों का निर्माण ग्रिड-पद्धति में था। मकान पकी हुई ईंटों से बनाए गए थे। जल-निकास व्यवस्था अत्यंत विकसित थी, जो उन्नत स्वच्छता का संकेत देती है।

**प्रश्न-2. हड़प्पावासियों के आर्थिक जीवन की व्याख्या कीजिए।**

**उत्तर-** हड़प्पा अर्थव्यवस्था कृषि, शिल्प और व्यापार पर आधारित थी। गेहूँ, जौ और कपास उगाई जाती थी। कुशल कारीगर मनके, मृद्भांड और मुहरें बनाते थे। आंतरिक और विदेशी व्यापार, विशेषकर मेसोपोटामिया के साथ, प्रचलित था।

**प्रश्न-3. हड़प्पावासियों के धार्मिक विश्वासों पर चर्चा कीजिए।**

**उत्तर-** हड़प्पावासी प्रकृति-पूजक थे और जीववाद का पालन करते थे। मातृदेवी और पशुपति प्रमुख देवता थे। वृक्ष, पशु और अग्नि-पूजा प्रचलित थीं। दफन संस्कारों से मृत्यु के बाद जीवन में विश्वास का संकेत मिलता है।

**प्रश्न-4. हड़प्पा सभ्यता के पतन के क्या कारण थे?**

**उत्तर-** पतन के कारणों में बाढ़, भूकंप, नदियों का सूख जाना और जलवायु परिवर्तन शामिल थे। आर्य आक्रमण सिद्धांत को अस्वीकार किया गया है। सभ्यता का पतन क्रमिक था और यह स्थानीय संस्कृतियों में विलीन हो गई।

**प्रश्न-5. गैर-हड़प्पा ताम्र-पाषाण संस्कृतियों पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।**

**उत्तर-** गैर-हड़प्पा ताम्र-पाषाण संस्कृतियाँ ग्रामीण समाज थीं। प्रमुख संस्कृतियाँ बनास, कायथा, मालवा और जोरवे थीं। लोग मिट्टी के मकानों में रहते थे और पत्थर तथा ताँबे के औजारों का उपयोग करते थे। कृषि और पशुपालन उनके मुख्य व्यवसाय थे।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

# 2

# वैदिक काल (1500BC–600BC)

## परिचय

हड़प्पा सभ्यता के पतन के बाद भारत में नई ग्रामीण बस्तियाँ उभरीं। लगभग उसी समय आर्य या इंडो-आर्य कहलाने वाले लोगों का एक समूह उत्तर-पश्चिमी भारत में आया। इन लोगों की संस्कृति और जीवन के बारे में हमें उनके धार्मिक ग्रंथों, जिन्हें वेद कहा जाता है, से जानकारी मिलती है। इस काल को वैदिक काल कहा जाता है।

## वैदिक साहित्य

1. 'वेद' शब्द 'विद्' धातु से बना है, जिसका अर्थ है "जानना"।
2. वेदों में वैदिक लोगों का पवित्र ज्ञान निहित है।
3. वैदिक साहित्य की दो मुख्य श्रेणियाँ हैं:
    - **मंत्र**
    - **ब्राह्मण**

## मंत्र ग्रंथ

1. **ऋग्वेद** – सबसे प्राचीन वेद, जिसमें 10 मंडलों में 1028 सूक्त हैं।
2. **सामवेद** – गाए जाने वाले मंत्र।
3. **यजुर्वेद** – यज्ञ और अनुष्ठानों की विधियाँ।
4. **अथर्ववेद** – जादुई मंत्र और टोने-टोटके।

## ब्राह्मण, आरण्यक और उपनिषद

1. **ब्राह्मण** ग्रंथों में यज्ञ और मंत्रों की व्याख्या है।
2. **आरण्यक** वन-ग्रंथ हैं।
3. **उपनिषदों** में दार्शनिक विचार हैं।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

4. इन ग्रंथों को '**श्रुति**' भी कहा जाता है।

5. उपनिषदों को '**वेदांत**' (वेदों का अंत) कहा जाता है।

## आर्यों का स्थानांतरण

1. आर्य कोई जाति नहीं बल्कि एक **भाषायी समूह** थे।
2. वे संस्कृत, लैटिन और ग्रीक जैसी इंडो-यूरोपीय भाषाएँ बोलते थे।
3. आर्यों का मूल स्थान मध्य **एशिया के स्तेपी** क्षेत्र थे।
4. पुरातात्विक साक्ष्य **एंड्रोनोवो संस्कृति** से मिलते हैं।
5. आर्य कई चरणों में अफगानिस्तान के रास्ते भारत आए।
6. कुछ विद्वान आर्यों को स्वदेशी मानते हैं, परंतु प्रवासन सिद्धांत अधिक स्वीकार्य है।

## वैदिक आर्यों का भौगोलिक विस्तार क्षेत्र

1. प्रारंभिक वैदिक आर्य '**सप्त-सिंधु**' क्षेत्र में रहते थे।
2. 'सप्त-सिंधु' का अर्थ है सात नदियों की भूमि।
3. इन नदियों में सिंधु, झेलम, चिनाब, रावी, व्यास, सतलज और सरस्वती शामिल थीं।
4. उत्तर वैदिक काल में आर्य पूर्व की ओर **उत्तर प्रदेश और बिहार** तक बढ़े।
5. उनका संपर्क अनार्य लोगों से हुआ।

## प्रारंभिक वैदिक अर्थव्यवस्था

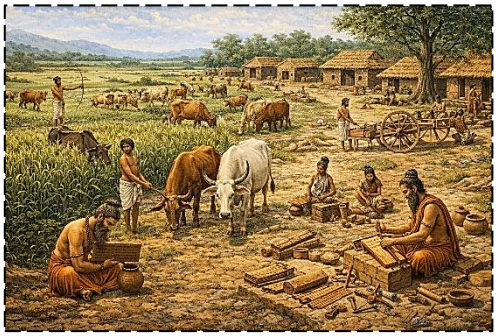

1. प्रारंभिक वैदिक लोग पशुपालक थे।
2. पशुपालन मुख्य व्यवसाय था।
3. गाय संपत्ति का प्रतीक थी।
4. कृषि का ज्ञान था, पर सीमित स्तर पर।
5. जौ (यव) मुख्य फसल थी।
6. शिकार, बुनाई, बढ़ईगिरी और रथ निर्माण अन्य कार्य थे।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

7. **विनिमय प्रणाली** प्रचलित थी और गाय विनिमय का माध्यम थी।

## उत्तर वैदिक काल में आए परिवर्तन (आर्थिक)

1. कृषि मुख्य व्यवसाय बन गई।
2. गेहूँ, चावल, दालें, गन्ना और बाजरा उगाए जाने लगे।
3. भैंसों का उपयोग हल चलाने में होने लगा।
4. लगभग 1000 ईसा पूर्व के आसपास **लोहे का प्रयोग शुरू हुआ।**
5. लोहे के हल से जंगल साफ हुए और उत्पादन बढ़ा।
6. जनसंख्या बढ़ी और बस्तियाँ विस्तृत हुईं।
7. कुछ बस्तियाँ नगरों में विकसित होने लगीं।

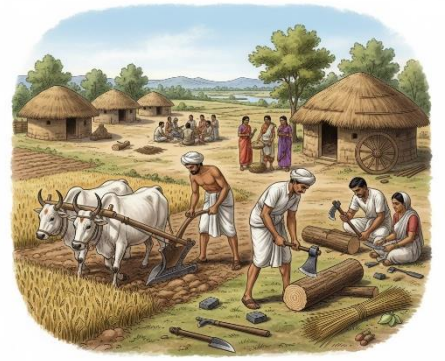

## प्रारंभिक वैदिक समाज

1. परिवार समाज की मूल इकाई था।
2. समाज **पितृसत्तात्मक** था।
3. एकपत्नी प्रथा सामान्य थी, पर प्रमुखों में बहुपत्नी प्रथा भी थी।
4. समाज अपेक्षाकृत समतावादी था।
5. कठोर जाति व्यवस्था नहीं थी।
6. महिलाओं को सम्मानजनक स्थान प्राप्त था और वे सभाओं में भाग लेती थीं।
7. सभा और समिति में महिलाओं की भागीदारी थी।

## उत्तर वैदिक काल के सामाजिक परिवर्तन

1. संयुक्त परिवार प्रणाली विकसित हुई।
2. **गोत्र** व्यवस्था का उदय हुआ।
3. महिलाओं पर प्रतिबंध बढ़े।
4. वर्ण व्यवस्था कठोर हुई।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

5. **चार वर्ण बने** – ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र।
6. शूद्रों को उपनयन संस्कार से वंचित रखा गया।
7. **वर्णाश्रम धर्म** की अवधारणा विकसित हुई।

## प्रारंभिक वैदिक धर्म

1. धर्म सरल और प्रकृति-आधारित था।
2. देवता प्राकृतिक शक्तियों के प्रतीक थे।
3. **प्रमुख देवता –** इंद्र, अग्नि, वरुण, सोम और पूषन।
4. इंद्र सबसे शक्तिशाली देवता थे।
5. देवताओं को प्रसन्न करने हेतु यज्ञ किए जाते थे।
6. मंदिर या मूर्ति-पूजा नहीं थी।

## उत्तर वैदिक काल में हुए परिवर्तन

1. विष्णु और रुद्र का महत्व बढ़ा।
2. विष्णु और रुद्र का महत्व बढ़ा।
3. विष्णु और रुद्र का महत्व बढ़ा।
4. ब्राह्मणों की शक्ति बढ़ी।
5. अत्यधिक यज्ञों का विरोध हुआ।
6. उपनिषदों में कर्म, पुनर्जन्म और मोक्ष पर बल दिया गया।

## प्रारंभिक वैदिक राज्य व्यवस्था

1. 'जन' राजनीतिक इकाई थी।
2. 'राजन' जन का प्रमुख था।
3. सभा और समिति महत्वपूर्ण संस्थाएँ थीं।
4. प्रमुख का चुनाव होता था, वह वंशानुगत नहीं था।

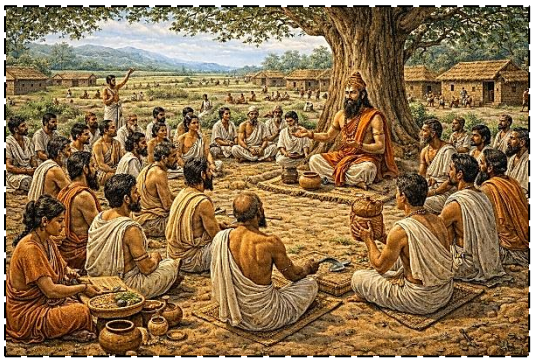

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

5. 'बली' स्वैच्छिक योगदान था।
6. प्रशासन सरल और सहभागितापूर्ण था।

**उत्तर वैदिक काल में आए परिवर्तन**

1. प्रमुख का पद वंशानुगत हो गया।
2. सभा और समिति की शक्ति घट गई।
3. राजत्व को दैवी स्वरूप दिया गया।
4. बली, भाग और शुल्क जैसे कर लगाए गए।
5. प्रारंभिक सेना और अधिकारी वर्ग का विकास हुआ।
6. इससे **जनपद** और **महाजनपदों** का उदय हुआ।

# TOP 5 QUESTIONS

**प्रश्न–1. प्रारंभिक वैदिक अर्थव्यवस्था की मुख्य विशेषताओं का वर्णन कीजिए।**

**Answer-** प्रारंभिक वैदिक अर्थव्यवस्था मुख्यतः पशुपालक थी। पशुपालन प्रमुख व्यवसाय था। कृषि सीमित थी और जौ मुख्य फसल थी। विनिमय प्रणाली प्रचलित थी तथा गाय विनिमय का माध्यम थी।

**प्रश्न–2. उत्तर वैदिक काल में लोहे के उपयोग से आए परिवर्तनों की व्याख्या कीजिए।**

**उत्तर-** लोहे के औजारों से जंगल साफ किए गए और कृषि का विस्तार हुआ। लोहे के हल से उत्पादन बढ़ा। इससे जनसंख्या में वृद्धि हुई, बस्तियाँ बड़ी हुईं और प्रारंभिक नगर विकसित हुए।

**प्रश्न–3. उत्तर वैदिक काल के सामाजिक परिवर्तनों पर चर्चा कीजिए।**

**उत्तर-** संयुक्त परिवार और गोत्र व्यवस्था विकसित हुई। वर्ण व्यवस्था कठोर हुई। महिलाओं के अधिकार सीमित हुए। शूद्रों को समाज के निचले स्तर पर रखा गया।

**प्रश्न–4. प्रारंभिक वैदिक लोगों के धार्मिक विश्वासों का वर्णन कीजिए।**

**उत्तर-** प्रारंभिक वैदिक धर्म प्रकृति-आधारित था। इंद्र, अग्नि और वरुण जैसे देवताओं की पूजा की जाती थी। यज्ञ भौतिक लाभ के लिए किए जाते थे। मंदिर या मूर्ति-पूजा का प्रचलन नहीं था।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

**प्रश्न–5. प्रारंभिक वैदिक काल की राजनीतिक व्यवस्था की व्याख्या कीजिए।**

**उत्तर-** राजनीतिक व्यवस्था जन-आधारित थी। राजन का चुनाव होता था और वह सभा व समिति की सहायता से शासन करता था। प्रशासन सरल था। बली स्वैच्छिक था और सभाएँ प्रमुख की शक्ति को नियंत्रित करती थीं।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

# 3
# मौर्योत्तर काल

## परिचय

मौर्य साम्राज्य का पतन लगभग 187 ईसा पूर्व में हुआ। इसके बाद भारत के विभिन्न भागों में अनेक क्षेत्रीय राज्य उभरे। इस काल में मध्य एशिया से आक्रमण, दूर-दराज़ के व्यापार में वृद्धि तथा कला, स्थापत्य और संस्कृति में उल्लेखनीय विकास हुआ, जो गुप्तों के उदय तक जारी रहा।

## उत्तर भारत का राजनीतिक इतिहास

### (i) शुंग

1. अंतिम मौर्य शासक **बृहद्रथ** की हत्या पुष्यमित्र शुंग ने की।
2. पुष्यमित्र ने उत्तर भारत में **शुंग वंश** की स्थापना की।
3. शुंगों का संपर्क हिंद-यूनानियों (यवनों) से हुआ।
4. बेसनगर (विदिशा) के **हेलियोडोरस** स्तंभ लेख में शुंग दरबार में एक हिंद-यूनानी दूत का उल्लेख है।
5. अंतिम शुंग शासक की हत्या उसके मंत्री वसुदेव ने की, जिसने **कण्व वंश** की स्थापना की।

### (ii) बैक्ट्रियन या हिंद-यूनानी

1. सिकंदर की मृत्यु के बाद हिंद-यूनानी उत्तर-पश्चिमी भारत में बस गए।
2. वे **बैक्ट्रिया** (उत्तर अफगानिस्तान) से शासन करते थे।
3. सबसे प्रसिद्ध शासक मेनांडर **(मिलिंद)** था।
4. उसका उल्लेख बौद्ध ग्रंथ **मिलिंदपन्हो** में मिलता है।
5. नागसेन से संवाद के बाद मेनांडर ने बौद्ध धर्म स्वीकार किया।.

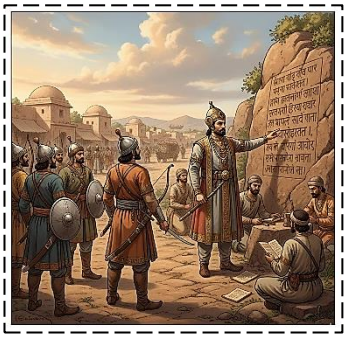

### (iii) शक

1. शक मध्य एशिया के निवासी थे, जिन्हें **स्किथियन** भी कहा जाता है।
2. वे तक्षशिला के आसपास बस गए।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

3. उनका राज्य **मथुरा और गुजरात** तक फैल गया।
4. सबसे प्रसिद्ध शासक **रुद्रदामन** था।
5. उसका **जूनागढ़ (गिरनार) अभिलेख संस्कृत** में प्रथम राजकीय अभिलेख माना जाता है।

### (iv) पार्थियन

1. पार्थियन **मूलतः ईरानी** थे।
2. भारतीय स्रोतों में उन्हें **पहलव** कहा गया है।
3. **तख्त-ए-बाही** अभिलेख (45 ई.) में गोंडोफेरेस का उल्लेख है।
4. साहित्यिक स्रोतों में उसका संबंध **सेंट थॉमस** से बताया गया है।

### कुषाण

1. कुषाण मूलतः पश्चिमी चीन के यू-ची समूह से संबंधित थे।
2. उन्होंने शक और पहलवों को पराजित कर एक विशाल साम्राज्य की स्थापना की।
3. प्रमुख शासक:
    - **कुजुल कडफिसेस**
    - **विम कडफिसेस**
    - **कनिष्क (सबसे प्रसिद्ध)**

4. कनिष्क 78 ई. में सिंहासन पर बैठा और शक संवत् प्रारंभ किया।
5. उसका साम्राज्य मध्य एशिया से वाराणसी तक विस्तृत था।

### कुषाण : राजव्यवस्था तथा प्रशासन

1. साम्राज्य संभवतः प्रांतों में विभाजित था।
2. प्रांतीय शासकों को **महाक्षत्रप और क्षत्रप** कहा जाता था।
3. कुषाण शासक '**देवपुत्र**' की उपाधि धारण करते थे।

### कुषाणों का योगदान

1. आंतरिक और बाह्य व्यापार में वृद्धि हुई।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

2. बड़ी संख्या में स्वर्ण और तांबे के सिक्के जारी किए गए।
3. बौद्ध धर्म को संरक्षण दिया गया।
4. **चतुर्थ बौद्ध संगीति का आयोजन कुंडलवन (कश्मीर) में हुआ।**
5. **चरक और अश्वघोष** जैसे विद्वान इस काल में प्रसिद्ध हुए।
6. गांधार और मथुरा कला शैलियों को संरक्षण मिला।

## मध्य एशिया के साथ संपर्क

1. मध्य एशिया से संपर्क के कारण **सांस्कृतिक समन्वय** हुआ।
2. विदेशियों को भारतीय समाज में क्षत्रिय के रूप में स्थान मिला।
3. **सिक्का निर्माण** की नई विधियाँ प्रचलित हुईं।
4. यूनानी शैली के सिक्कों ने भारतीय सिक्कों को प्रभावित किया।
5. भारतीयों ने यूनानियों से **खगोलशास्त्र** का ज्ञान प्राप्त किया।
6. हिंद-यूनानी संपर्क से गांधार कला का विकास हुआ।

## उड़ीसा तथा दक्कन में प्रारंभिक राज्यों का उदय

### कलिंग

1. अशोक के बाद **चेदि वंश** के अधीन कलिंग प्रमुख बना।
2. **खारवेल** सबसे प्रसिद्ध शासक था।
3. उसकी उपलब्धियाँ **हाथीगुम्फा अभिलेख** में वर्णित हैं।
4. वह **जैन धर्म** का अनुयायी था।

### सातवाहन

1. पहली शताब्दी ईसा पूर्व के मध्य सातवाहन दक्कन में प्रमुख शक्ति के रूप में उभरे।
2. **गौतमीपुत्र शातकर्णि** सबसे महान शासक था।
3. राजधानी **प्रतिष्ठान (पैठान)** थी।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

4. राज्य **कृष्णा से गोदावरी** नदी तक फैला था।

**राज्य कृष्णा से गोदावरी नदी तक फैला था।**

1. राज्य '**आहार' या 'राष्ट्र'** नामक जिलों में विभाजित था।
2. ग्राम प्रशासन की सबसे छोटी इकाई था, जिसका प्रमुख **ग्रामिक** होता था।
3. **अमात्य** नामक अधिकारी राजा की सहायता करते थे
4. सातवाहनों ने ब्राह्मणों और बौद्धों को **कर-मुक्त भूमि** दान की परंपरा शुरू की।
5. वे स्वयं को **ब्राह्मण वर्ण** से संबंधित मानते थे।.

**व्यापारिक तथा वाणिज्यिक गतिविधियाँ**

**(i) आंतरिक तथा बाह्य मार्ग**

1. दो प्रमुख स्थल मार्ग:
    - **उत्तरापथ** (उत्तर और उत्तर-पश्चिम भारत)
    - **दक्षिणापथ** (उत्तर से दक्षिण भारत)
2. पश्चिमी तट के प्रमुख बंदरगाह: भृगुकच्छ, सोपारा, मुजिरिस।
3. पूर्वी तट के प्रमुख बंदरगाह: ताम्रलिप्ति और अरिकमेडु।

**(ii) पश्चिम और मध्य एशिया के साथ व्यापार**

1. **रोमन साम्राज्य** के साथ व्यापार अत्यंत समृद्ध था।
2. इसका सर्वश्रेष्ठ विवरण ***पेरिप्लस ऑफ द एरिथ्रियन सी*** में मिलता है।
3. **निर्यात:** मसाले, काली मिर्च, हाथीदांत, वस्त्र, मोती।
4. **आयात:** सोना, चाँदी, मदिरा, मूंगा और दास।

**(iii) शिल्प तथा उद्योग**

1. बड़ी संख्या में विशिष्ट कारीगर थे।
2. मथुरा और वंग में वस्त्र उद्योग विकसित था।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

3. उज्जैन **मनका निर्माण** का प्रमुख केंद्र था।

**(iv) श्रेणियाँ**

1. व्यापारिक संघों को **श्रेणी** कहा जाता था।
2. व्यापारी श्रेणी का प्रधान **श्रेष्ठी** कहलाता था।
3. काफिला व्यापारियों को **सार्थवाह** कहा जाता था।
4. श्रेणियाँ मूल्य और गुणवत्ता नियंत्रित करती थीं तथा बैंक का कार्य भी करती थीं।

## कला और स्थापत्य

**(i) स्तूप**

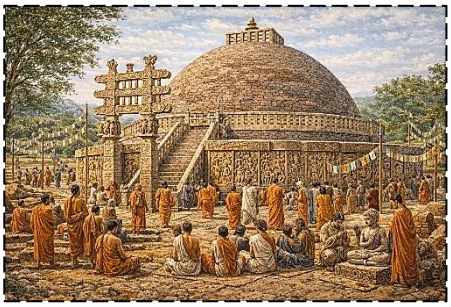

1. स्तूप बौद्ध धार्मिक संरचनाएँ थीं।
2. **प्रमुख स्तूप:** साँची, भरहुत, अमरावती, नागार्जुनकोंडा।
3. मूर्तियों में बुद्ध के जीवन और जातक कथाओं का चित्रण है।

**(ii) शैल-कट वास्तुकला**

1. शैल-कट चैत्य और विहार विकसित हुए।
2. **प्रमुख केंद्र**: नासिक और पुणे क्षेत्र।

**(iii) मूर्तिकला की शैलियाँ**

**1. मथुरा शैली –** लाल बलुआ पत्थर, बुद्ध की प्रारंभिक प्रतिमाएँ।

**2. गांधार शैली –** यूनानी प्रभाव, धूसर पत्थर।

**3. अमरावती शैली –** श्वेत संगमरमर सदृश पत्थर, कथात्मक कला।

## दक्षिण भारत का प्रारंभिक इतिहास

**(i) महापाषाण संस्कृति**

1. महापाषाण पत्थरों से ढकी हुई समाधियाँ थीं।
2. **काल:** 1200 ईसा पूर्व – 300 ईसा पूर्व।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

3. लोहे के औजार और काले-लाल मृद्भांडों का उपयोग।
4. **प्रमुख स्थल:** ब्रह्मगिरि, मास्की, आदिचनल्लूर, जुनापानी।

**(ii) संगम युग**

1. संगम युग तमिल साहित्यिक सभाओं से संबंधित है।
2. साहित्य की रचना **300 ईसा पूर्व – 300 ईस्वी** के बीच हुई।
3. मुख्य विषय: **प्रेम (अहम) और युद्ध (पुरम)।**
4. प्रमुख शासक: **चोल, चेर और पांड्य।**
5. तमिल क्षेत्र पाँच **'तिनै'** (पर्यावरणीय क्षेत्र) में विभाजित था।
6. कृषि, शिल्प और हिंद-रोमन व्यापार उन्नत थे।
7. संगम साहित्य समाज, अर्थव्यवस्था और संस्कृति का सजीव चित्र प्रस्तुत करता है।

# TOP 5 QUESTIONS

**प्रश्न-1. मौर्यों के बाद उत्तर भारत में प्रमुख राजनीतिक विकासों पर चर्चा कीजिए।**

**उत्तर-** मौर्यों के बाद शुंग और कण्व जैसे क्षेत्रीय वंश उभरे। हिंद-यूनानी, शक, पार्थियन और कुषाण जैसे विदेशी शासकों ने भी भारत में राज्य स्थापित किए। इस काल में राजनीतिक विखंडन के साथ-साथ मध्य एशिया से संपर्क भी बढ़ा।

**प्रश्न-2. कुषाण कौन थे? भारतीय इतिहास में उनके योगदान की व्याख्या कीजिए।**

**उत्तर -** कुषाण मध्य एशियाई शासक थे जिन्होंने कनिष्क के नेतृत्व में विशाल साम्राज्य स्थापित किया। उन्होंने व्यापार को प्रोत्साहित किया, स्वर्ण मुद्राएँ जारी कीं, बौद्ध धर्म का संरक्षण किया, चतुर्थ बौद्ध संगीति का आयोजन कराया तथा गांधार और मथुरा कला शैलियों को बढ़ावा दिया।

**प्रश्न-3. मौर्योत्तर काल में व्यापार और वाणिज्य की वृद्धि का वर्णन कीजिए।**

**उत्तर -** स्थल और समुद्री मार्गों से व्यापार का विस्तार हुआ। रोमन साम्राज्य के साथ समृद्ध व्यापार था। मसाले, वस्त्र और हाथीदांत का निर्यात होता था, जबकि सोना और चाँदी आयात किए जाते थे। श्रेणियों ने व्यापार और बैंकिंग में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

**प्रश्न-4. सातवाहनों पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।**

**उत्तर -** सातवाहनों ने दक्कन में शासन किया और उनकी राजधानी प्रतिष्ठान थी। गौतमीपुत्र शातकर्णि उनके महान शासक थे। उनका प्रशासन सुव्यवस्थित था, उन्होंने व्यापार को प्रोत्साहन दिया और कर-मुक्त भूमि दान की परंपरा प्रारंभ की।

**प्रश्न-5. संगम साहित्य से प्रारंभिक दक्षिण भारतीय समाज के बारे में क्या जानकारी मिलती है?**

**उत्तर -** संगम साहित्य दक्षिण भारत के राजनीतिक जीवन, अर्थव्यवस्था, सामाजिक संरचना और संस्कृति का वर्णन करता है। इसमें चोल, चेर और पांड्य शासकों, समृद्ध व्यापार, स्त्रियों की भूमिका, पारिस्थितिक क्षेत्रों और रोमन व्यापारियों से संपर्क का उल्लेख मिलता है।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

# 4

# गुप्तवंश तथा उनके उत्तराधिकारी (A.D.300–750)

## परिचय

कुषाणों के पतन के पश्चात् उत्तर भारत में गुप्त वंश का उदय हुआ। गुप्तों ने अनुकूल भौतिक परिस्थितियों, उपजाऊ भूमि तथा लौह संसाधनों की उपलब्धता के कारण एक विशाल साम्राज्य की स्थापना की। उनके शासनकाल में राजनीतिक स्थिरता, आर्थिक उन्नति तथा कला, साहित्य, विज्ञान और संस्कृति के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति हुई। उनके पतन के बाद उत्तर और दक्षिण भारत में अनेक क्षेत्रीय शक्तियाँ उभर कर सामने आईं।

## राजनीतिक इतिहास

### (a) चन्द्रगुप्त प्रथम (319–334 ई.)

1. गुप्त साम्राज्य का वास्तविक संस्थापक।
2. **319 ई. में गुप्त संवत्** का प्रारंभ किया।
3. **महाराजाधिराज** की उपाधि धारण की।
4. लिच्छवि राजकुमारी **कुमारदेवी** से विवाह किया।
5. इस वैवाहिक संबंध से उसे वैधता, प्रतिष्ठा और शक्ति प्राप्त हुई।
6. मगध, साकेत और प्रयाग पर शासन किया तथा राजधानी **पाटलिपुत्र** थी।

### (b) समुद्रगुप्त (335–375 ई.)

1. चन्द्रगुप्त प्रथम का पुत्र और उत्तराधिकारी।
2. अपनी विजयों के कारण "**भारत का नेपोलियन**" कहा गया।
3. उसकी उपलब्धियाँ **इलाहाबाद स्तंभ** लेख में हरिषेण द्वारा अंकित हैं।
4. विभिन्न नीतियों का पालन किया:
    - **गंगा-यमुना** दोआब में राज्य-विलय
    - **वन राज्यों** को अधीन करना

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

- दक्षिण भारत में **राजनीतिक समझौते** की नीति

5. अश्वमेध यज्ञ किया और अश्वमेध प्रकार की मुद्राएँ जारी कीं।
6. वह कवि, संगीतज्ञ तथा विद्या का संरक्षक था।

**(c) चन्द्रगुप्त द्वितीय (375–414 ई.)**

1. **विक्रमादित्य** के नाम से प्रसिद्ध।
2. वैवाहिक संबंधों द्वारा साम्राज्य को सुदृढ़ किया।
3. पश्चिमी भारत के **शक शासकों** को पराजित किया।
4. साम्राज्य का विस्तार पश्चिमी तट तक किया।
5. उसके दरबार में **नवरत्न** थे।
6. **कालिदास** सबसे प्रसिद्ध कवि थे।
7. चीनी यात्री **फाह्यान** उसके शासनकाल में भारत आया।

**(d) गुप्तों का पतन**

1. हूण आक्रमणों से साम्राज्य कमजोर हुआ।
2. **स्कन्दगुप्त** ने प्रारंभिक हूण आक्रमणों को विफल किया।
3. बाद के शासक हूणों का प्रतिरोध न कर सके।
4. व्यापार और अर्थव्यवस्था में गिरावट आई।
5. स्वर्ण मुद्राओं का अवमूल्यन हुआ।
6. भूमि **दान और सामंती** प्रवृत्तियों की वृद्धि से राजनीतिक विखंडन हुआ।

**मैत्रक**

1. **सौराष्ट्र (गुजरात)** में शासन किया।
2. राजधानी **वलभी** थी।
3. **ध्रुवसेन द्वितीय** प्रमुख शासक था।
4. वलभी शिक्षा और व्यापार का केंद्र बना।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

5. आठवीं शताब्दी के मध्य तक शासन किया।

## मौखरी

1. उत्तर प्रदेश में **कन्नौज** पर शासन किया।
2. प्रारंभ में गुप्तों के अधीन सामंत थे।
3. कन्नौज ने पाटलिपुत्र का स्थान राजनीतिक केंद्र के रूप में लिया।
4. बाद में उनका राज्य पुष्यभूति वंश में मिल गया।

## थानेसर का पुष्यभूति वंश

1. राजधानी **थानेसर (कुरुक्षेत्र)** थी।
2. **प्रभाकरवर्धन** ने राज्य को सुदृढ़ किया।
3. **हर्षवर्धन (606–647 ई.)** सबसे महान शासक था।
4. राजधानी **कन्नौज** स्थानांतरित की।
5. पंजाब, उत्तर प्रदेश, बिहार, बंगाल और उड़ीसा पर नियंत्रण किया।
6. नर्मदा नदी पर चालुक्य शासक **पुलकेशिन द्वितीय** से पराजित हुआ।
7. उसके बारे में जानकारी **हर्षचरित** (बाणभट्ट) तथा **सी-यू-की** (ह्वेनसांग) से मिलती है।

## वाकाटक

1. **उत्तरी महाराष्ट्र और विदर्भ** में शासन किया।
2. अनेक भूमि दान पत्र जारी किए।
3. **रुद्रसेन द्वितीय** ने चन्द्रगुप्त द्वितीय की पुत्री प्रभावतीगुप्ता से विवाह किया।
4. दक्षिण भारत में ब्राह्मण संस्कृति के प्रसार में सहायक बने।

## चालुक्य (6ठी–8वीं शताब्दी)

1. राजधानी **वातापी (बादामी)** थी।
2. **पुलकेशिन द्वितीय** महान शासक था।
3. हर्षवर्धन को पराजित किया।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

4. **दक्षिणापथेश्वर** की उपाधि धारण की।
5. पल्लवों से निरंतर संघर्ष रहा।
6. **ऐहोल, बादामी और पट्टदकल** में मंदिर स्थापत्य के लिए प्रसिद्ध।

## पल्लव

1. दक्षिण आंध्र और उत्तर तमिलनाडु में शासन किया।
2. राजधानी **कांची** थी।
3. **महेन्द्रवर्मन प्रथम** और **नरसिंहवर्मन प्रथम** प्रमुख शासक थे।
4. **भक्ति आंदोलन** और द्रविड़ स्थापत्य को संरक्षण दिया।
5. **महाबलीपुरम** प्रमुख मंदिर केंद्र बना।

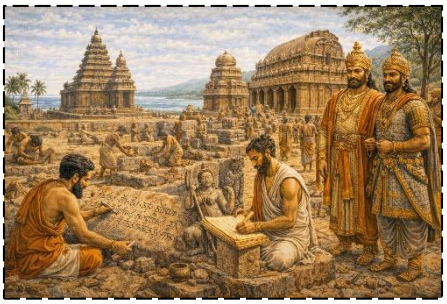

## प्रशासनिक प्रणाली (300–750 ई.)

1. प्रशासन **विकेन्द्रित** था।
2. साम्राज्य को **भुक्ति/राष्ट्र/देश** नामक प्रांतों में विभाजित किया गया।
3. प्रांत का प्रमुख **उपरिक** कहलाता था।
4. जिले **'विषय'** कहलाते थे।
5. ग्राम प्रशासन की सबसे छोटी इकाई था।
6. उच्च अधिकारी **कुमारामात्य** कहलाते थे।
7. भूमि करों में वृद्धि हुई; **'विश्टि' (बेगार)** प्रचलित थी।
8. न्याय प्रणाली में दीवानी और फौजदारी कानूनों का स्पष्ट विभाजन था।

## समाज

1. **ब्राह्मणों** की सर्वोच्चता में वृद्धि हुई।
2. बड़े पैमाने पर भूमि दान से ब्राह्मण भू-स्वामी बने।
3. जातियों की संख्या बढ़ी।
4. जनजातियों और विदेशियों को वर्ण व्यवस्था में समाहित किया गया।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

5. शूद्रों की स्थिति में कुछ सुधार हुआ।
6. अछूत (चांडाल) गाँव के बाहर रहते थे।
7. दास प्रथा विद्यमान थी।
8. महिलाओं की स्थिति में गिरावट आई; **सती** प्रथा के प्रमाण मिलते हैं।

## अर्थव्यवस्था

1. भूमि दान के कारण कृषि का विस्तार हुआ।
2. लौह हल, सिंचाई और खाद के प्रयोग से उत्पादन बढ़ा।
3. किसानों पर कर का बोझ बढ़ा।
4. छठी शताब्दी के बाद व्यापार में गिरावट आई।
5. रोमन व्यापार में कमी से अर्थव्यवस्था प्रभावित हुई।
6. गुप्तोत्तर काल में सिक्कों की कमी रही।
7. अर्थव्यवस्था अधिक **ग्रामीण और आत्मनिर्भर** होती गई।

## साहित्य

1. गुप्त युग **साहित्य का स्वर्ण युग** माना जाता है।
2. रामायण और महाभारत का अंतिम रूप इसी काल में प्राप्त हुआ।
3. पुराणों की रचना हुई।
4. प्रमुख संस्कृत लेखक:
   - **कालिदास** – अभिज्ञानशाकुंतलम्, मेघदूतम्
   - **शूद्रक** – मृच्छकटिकम्
   - **विशाखदत्त** – मुद्राराक्षस
5. बाणभट्ट ने **हर्षचरित** की रचना की।
6. दक्षिण भारत में भक्ति साहित्य (आलवार और नयनार) का विकास हुआ।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

## कला तथा स्थापत्य कला

1. बौद्ध कला का विकास – **अजंता चित्रकला।**
2. **सुल्तानगंज** से विशाल ताम्र बुद्ध प्रतिमा प्राप्त हुई।
3. **नागर शैली** के संरचनात्मक मंदिर (भीतरगाँव, देवगढ़)।
4. **महाबलीपुरम** के पल्लव मंदिर।
5. **पट्टदकल** के चालुक्य मंदिर।
6. दक्षिण भारतीय स्थापत्य को **द्रविड़** शैली कहा गया।
7. गुप्तकालीन मुद्राएँ उत्कृष्ट कलात्मक नमूने थीं।

## धर्म

1. गुप्त शासकों ने **भगवतः** धर्म को संरक्षण दिया।
2. विष्णु और उनके अवतारों की पूजा प्रचलित थी।
3. **भक्ति और अहिंसा** पर बल दिया गया।
4. बौद्ध धर्म का विकास हुआ; नालंदा प्रमुख केंद्र बना।
5. दक्षिण भारत में **आलवार और नयनार** द्वारा भक्ति आंदोलन का प्रसार हुआ।
6. **तंत्रवाद** का प्रसार हुआ, जिसमें जनजातीय प्रथाओं का समावेश था।

## विज्ञान और प्रौद्योगिकी

1. **आर्यभट्ट** ने 'आर्यभटीय' की रचना की।
2. पृथ्वी की घूर्णन गति और शून्य की अवधारणा प्रस्तुत की।
3. **वराहमिहिर** ने 'पंचसिद्धान्तिका' लिखी।
4. धातुकर्म में प्रगति हुई।
5. **मेहरौली का लौह स्तंभ** जंग-रहित तकनीक का प्रमाण है।
6. अजंता चित्रों में रंगों के ज्ञान का परिचय मिलता है।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

# TOP 5 QUESTIONS

**प्रश्न-1. समुद्रगुप्त की राजनीतिक उपलब्धियों की व्याख्या कीजिए।**

**उत्तर-** समुद्रगुप्त ने विजय और कूटनीति के माध्यम से गुप्त साम्राज्य का विस्तार किया। उसकी उपलब्धियाँ इलाहाबाद स्तंभ लेख में अंकित हैं। उसने उत्तरी राज्यों का विलय किया, वन राज्यों को अधीन किया तथा दक्षिण में राजनीतिक समझौते की नीति अपनाई।

**प्रश्न-2. गुप्त काल को भारतीय संस्कृति का स्वर्ण युग क्यों कहा जाता है?**

**उत्तर-** इस काल में कला, साहित्य, विज्ञान और स्थापत्य में उल्लेखनीय प्रगति हुई। अजंता चित्रकला, कालिदास का संस्कृत साहित्य, मंदिर स्थापत्य और आर्यभट्ट के वैज्ञानिक कार्य इसे स्वर्ण युग सिद्ध करते हैं।

**प्रश्न-3. गुप्त प्रशासनिक प्रणाली का वर्णन कीजिए।**

**उत्तर-** गुप्त प्रशासन विकेन्द्रित था। प्रांतों का शासन उपरिक करते थे तथा जिलों का शासन विषयपति। ग्राम प्रशासन की सबसे छोटी इकाई था। भूमि राजस्व आय का मुख्य स्रोत था तथा न्याय प्रणाली विकसित थी।

**प्रश्न-4. गुप्त काल की सामाजिक स्थिति का वर्णन कीजिए।**

**उत्तर-** समाज अधिक स्तरीकृत हो गया था। भूमि दानों से ब्राह्मणों की सर्वोच्चता बढ़ी। जाति व्यवस्था कठोर हुई। शूद्रों की स्थिति में कुछ सुधार हुआ, परंतु अछूतों के साथ भेदभाव बना रहा। महिलाओं की स्थिति में गिरावट आई और सती प्रथा के प्रमाण मिलते हैं।

**प्रश्न-5. गुप्त साम्राज्य के पतन के कारणों की व्याख्या कीजिए।**

**उत्तर-** हूण आक्रमण, आर्थिक गिरावट, स्वर्ण मुद्राओं का अवमूल्यन, सामंती प्रवृत्तियों की वृद्धि तथा दुर्बल उत्तराधिकारियों के कारण गुप्त साम्राज्य का पतन हुआ। राजनीतिक विखंडन से क्षेत्रीय राज्यों का उदय हुआ।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

# 5

# भारत में ब्रिटिश शासन का संस्थापन 1857 तक

## परिचय

औपचारिक ब्रिटिश शासन से पहले भारत और यूरोप के बीच व्यापारिक संबंध विद्यमान थे। ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी, जिसकी स्थापना 1600 ई. में हुई, प्रारंभ में एक व्यापारिक संस्था के रूप में भारत आई थी। धीरे-धीरे भारतीय राज्यों की राजनीतिक कमजोरी और ब्रिटिश सैन्य शक्ति के कारण कंपनी एक व्यापारिक संस्था से राजनीतिक शक्ति में परिवर्तित हो गई। सामान्यतः ब्रिटिश शासन की शुरुआत 1757 के प्लासी के युद्ध से मानी जाती है और 1858 में जब ब्रिटिश क्राउन ने भारत का प्रत्यक्ष शासन अपने हाथ में लिया, तब यह चरण समाप्त हुआ।

## एशिया के साथ यूरोपीय व्यापार का एक नया चरण

1. बेहतर गुणवत्ता और कम मूल्य के कारण भारतीय वस्तुओं की यूरोप में अत्यधिक मांग थी।
2. इससे यूरोप से भारत की ओर सोना-चाँदी का प्रवाह हुआ।
3. प्रारंभ में ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी का उद्देश्य केवल व्यापार था, उपनिवेश स्थापना नहीं।
4. 1650 के बाद व्यापारियों का एक नया वर्ग उपनिवेश स्थापित करने के उद्देश्य से सक्रिय हुआ।
5. मुगल साम्राज्य के पतन से राजनीतिक शून्य उत्पन्न हुआ।
6. बंगाल, अवध, हैदराबाद और मराठों जैसे क्षेत्रीय राज्य उभरे, परंतु उनमें एकता का अभाव था।
7. ब्रिटिशों ने अपने विस्तार के लिए तीन उपाय अपनाए:
    - युद्ध और विजय
    - सहायक संधि प्रणाली
    - व्यपगत सिद्धांत

## दक्षिण भारत में आंग्ल-फ्रांसीसी संघर्ष

1. भारत में ब्रिटिश और फ्रांसीसी कंपनियाँ प्रभुत्व के लिए प्रतिस्पर्धा कर रही थीं।
2. इस प्रतिद्वंद्विता के परिणामस्वरूप **तीन कर्नाटक युद्ध** हुए।
3. तृतीय कर्नाटक युद्ध निर्णायक सिद्ध हुआ।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

4. **1760 में वांडीवाश के युद्ध** में ब्रिटिशों ने फ्रांसीसियों को पराजित किया।
5. 1763 की पेरिस संधि के बाद फ्रांसीसी शक्ति का पतन हुआ।
6. ब्रिटिश सफलता का कारण उनकी सशक्त नौसेना, श्रेष्ठ नेतृत्व, सरकारी समर्थन और बंगाल के संसाधन थे।
7. भारतीय क्षेत्रीय शक्तियों में सैन्य और नौसैनिक कमजोरी थी।

## बंगाल पर ब्रिटिश अधिकार : प्लासी से बक्सर तक (1757–1765)

### प्लासी का युद्ध (1757)

1. **सिराजुद्दौला** बंगाल का नवाब था।
2. **कारण:** व्यापारिक विशेषाधिकारों का दुरुपयोग, कलकत्ता की किलेबंदी, ब्रिटिश हस्तक्षेप।
3. ब्रिटिशों ने मीर जाफर आदि के साथ षड्यंत्र किया।
4. ब्रिटिश विजय सैन्य श्रेष्ठता के कारण नहीं, बल्कि षड्यंत्र के कारण हुई।
5. मीर जाफर को नवाब बनाया गया और उसने कंपनी को भारी धनराशि दी।

### मीर कासिम और बक्सर का युद्ध (1764)

1. 1760 में मीर कासिम ने मीर जाफर का स्थान लिया।
2. उसने प्रशासनिक सुधार किए और व्यापार में समानता स्थापित करने का प्रयास किया।
3. ब्रिटिशों से संघर्ष के कारण युद्ध हुआ।
4. बक्सर के युद्ध में ब्रिटिशों ने मीर कासिम, शुजाउद्दौला और शाह आलम द्वितीय को पराजित किया।
5. 1765 की इलाहाबाद संधि से कंपनी को बंगाल, बिहार और उड़ीसा की दीवानी प्राप्त हुई।

## बंगाल की दोहरी शासन प्रणाली

1. मुगल प्रशासन दो भागों में विभाजित था:
   - **निज़ामत** – कानून और व्यवस्था तथा आपराधिक न्याय
   - **दीवानी** – राजस्व और दीवानी न्याय

2. 1765 के बाद कंपनी बंगाल की दीवान बनी।
3. Nawab retained responsibility of administration.

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

4. कंपनी ने प्रशासनिक जिम्मेदारी के बिना राजस्व पर नियंत्रण रखा।

5. इस व्यवस्था को **दोहरी या द्विगुण शासन** कहा गया।

6. कुप्रशासन के लिए नवाब को दोषी ठहराया गया।

## विस्तार की विचारधारा : उपकरण और तरीके

### युद्ध और विजय

1. ब्रिटिशों ने मैसूर, मराठों और सिखों से युद्ध किए।
2. **1799 में टीपू सुल्तान** की मृत्यु के बाद मैसूर पर अधिकार हुआ।
3. आंग्ल-मराठा युद्धों में मराठों की पराजय हुई।
4. 1849 में आंग्ल-सिख युद्धों के बाद पंजाब का विलय हुआ।

### सहायक संधि प्रणाली

1. **लॉर्ड वेलेजली ने 1798** में इसे प्रारंभ किया।
2. भारतीय शासकों ने ब्रिटिश संरक्षण स्वीकार किया।
3. देशी राज्यों में ब्रिटिश सेना तैनात की गई।
4. शासकों ने अनुदान दिया और अपनी विदेश नीति त्याग दी।
5. ब्रिटिश रेजिडेंट राज्य के मामलों को नियंत्रित करता था।
6. पहली संधि **हैदराबाद के निज़ाम** के साथ हुई।

### व्यपगत सिद्धांत

1. **लॉर्ड डलहौजी ने 1848–1856** के बीच इसे लागू किया।
2. यदि किसी शासक की प्राकृतिक संतान नहीं होती, तो राज्य का विलय कर लिया जाता।
3. दत्तक संतान को मान्यता नहीं दी जाती थी।
4. सतारा, झाँसी, नागपुर और संबलपुर का विलय किया गया।
5. अवध का विलय कुप्रशासन के आधार पर किया गया।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

## औपनिवेशिक प्रशासनिक तंत्र का विकास

1. ब्रिटिश संसद ने कंपनी के कार्यों को नियंत्रित करना प्रारंभ किया।
2. **1773 के रेग्युलेटिंग** एक्ट से गवर्नर-जनरल का पद सृजित हुआ।
3. वॉरेन हेस्टिंग्स प्रथम गवर्नर-जनरल बना।
4. **1784 के पिट्स इंडिया एक्ट** से संसदीय नियंत्रण बढ़ा।
5. कॉर्नवालिस ने प्रशासनिक सुधार किए और **स्थायी बंदोबस्त** लागू किया।
6. जमींदार भू-स्वामी बने और किसान काश्तकार।
7. मद्रास और बंबई में रैयतवाड़ी व्यवस्था लागू हुई।
8. 1813, 1833 और 1853 के चार्टर अधिनियमों से कंपनी का व्यापारिक एकाधिकार समाप्त हुआ।
9. सिविल सेवाओं का गठन हुआ; भारतीयों को बाहर रखा गया।

## न्यायिक संगठन

1. 1727 में प्रेसिडेंसी नगरों में **मेयर न्यायालय** स्थापित किए गए।
2. 1772 में **अदालत प्रणाली** लागू की गई।
3. विधि का शासन और कानून के समक्ष समानता की अवधारणा प्रस्तुत की गई।
4. **1774 में कलकत्ता** में सर्वोच्च न्यायालय की स्थापना हुई।
5. दीवानी और फौजदारी न्यायालय पृथक थे।
6. सदर दीवानी अदालत और सदर निज़ामत अदालत सर्वोच्च न्यायालय थे।
7. ब्रिटिश न्यायिक प्रणाली ने पारंपरिक भारतीय न्याय व्यवस्था को परिवर्तित कर दिया।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

# TOP 5 QUESTIONS

**प्रश्न-1. ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी ने भारत में अपना शासन कैसे स्थापित किया?**

**उत्तर-** ब्रिटिशों ने युद्ध और विजय, सहायक संधि प्रणाली तथा व्यपगत सिद्धांत के माध्यम से अपना शासन स्थापित किया। भारतीय राज्यों की राजनीतिक कमजोरी और ब्रिटिश सैन्य शक्ति ने उनके विस्तार में सहायता की।

**प्रश्न-2. प्लासी और बक्सर के युद्धों का महत्व स्पष्ट कीजिए।**

**उत्तर-** 1757 का प्लासी का युद्ध षड्यंत्र के माध्यम से बंगाल पर ब्रिटिश नियंत्रण स्थापित करने में सहायक हुआ। 1764 के बक्सर के युद्ध ने ब्रिटिश प्रभुत्व को सुनिश्चित किया और 1765 में कंपनी को बंगाल, बिहार और उड़ीसा की दीवानी प्राप्त हुई।

**प्रश्न-3. दोहरी शासन प्रणाली क्या थी? इसे क्यों लागू किया गया?**

**उत्तर-** द्वैध शासन प्रणाली में राजस्व का नियंत्रण कंपनी के पास था, जबकि प्रशासन नवाब के पास रहा। इसे प्रशासनिक जिम्मेदारी उठाए बिना राजस्व प्राप्त करने के उद्देश्य से लागू किया गया।

**प्रश्न-4. सहायक संधि प्रणाली का वर्णन तथा उसके प्रभाव स्पष्ट कीजिए।**

**उत्तर-** इस प्रणाली के अंतर्गत भारतीय शासकों ने ब्रिटिश सेना को अपने राज्य में रखने और विदेश नीति त्यागने की शर्त स्वीकार की। इससे भारतीय राज्य कमजोर हुए और बिना प्रत्यक्ष विलय के ब्रिटिश विस्तार संभव हुआ।

**प्रश्न-5. 1857 से पूर्व ब्रिटिशों द्वारा किए गए प्रशासनिक और न्यायिक परिवर्तनों की व्याख्या कीजिए।**

**उत्तर-** ब्रिटिशों ने गवर्नर-जनरल का पद सृजित किया, सिविल सेवाओं की स्थापना की, भूमि बंदोबस्त लागू किए तथा विधि के शासन पर आधारित नई न्यायिक प्रणाली स्थापित की। इन परिवर्तनों से शक्ति का केंद्रीकरण हुआ और औपनिवेशिक नियंत्रण सुदृढ़ हुआ।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

# 6

# आधुनिक भारत में सामाजिक परिवर्तन

## परिचय

18वीं और 19वीं शताब्दियों के दौरान भारतीय समाज में महत्वपूर्ण सामाजिक परिवर्तन हुए। ब्रिटिश शासन, पाश्चात्य शिक्षा का प्रसार, प्रेस का विकास, मध्यवर्ग का उदय तथा सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलनों ने भारतीय समाज के रूपांतरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इन परिवर्तनों ने राष्ट्रीय जागरण और स्वतंत्रता संग्राम की पृष्ठभूमि तैयार की।

## भारत में ब्रिटिश सांस्कृतिक नीतियाँ

### प्राच्यवाद (ओरिएंटलिस्ट)

1. प्रारंभिक ब्रिटिश प्रशासक जैसे वॉरेन हेस्टिंग्स, विलियम जोन्स और जोनाथन डंकन प्राच्यवादियों के रूप में जाने जाते थे।

2. वे मानते थे कि भारत का प्राचीन अतीत गौरवशाली है।

3. उन्होंने भारतीय भाषाओं, कानूनों और परंपराओं के अध्ययन को प्रोत्साहित किया।

4. स्थापित संस्थाएँ:

- **कलकत्ता मदरसा (1781)**
- **एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल (1784)**
- **संस्कृत कॉलेज, बनारस (1794)**

5. फोर्ट विलियम कॉलेज (1801) में ब्रिटिश अधिकारियों को भारतीय भाषाओं का प्रशिक्षण दिया जाता था।

### नीतियों पर विचारों का प्रभाव

1. ब्रिटिश नीतियाँ यूरोपीय विचारधाराओं से प्रभावित थीं।
2. **व्हिग दर्शन** ने शक्तियों के पृथक्करण पर बल दिया।
3. **लॉर्ड कॉर्नवालिस** ने प्रशासनिक सुधार किए।
4. 1793 का **स्थायी बंदोबस्त** व्हिग विचारों से प्रभावित था।
5. इंग्लैंड की औद्योगिक क्रांति ने मुक्त व्यापार को बढ़ावा दिया।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

6. 1813 के **चार्टर अधिनियम** से कंपनी का व्यापारिक एकाधिकार समाप्त हुआ।

## सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलन

### बंगाल पुनर्जागरण

1. बंगाल में हुए सुधार आंदोलनों को बंगाल पुनर्जागरण कहा जाता है।

**2. प्रमुख क्षेत्र:**

- भारत के अतीत की पुनः खोज
- भाषा और साहित्य का आधुनिकीकरण
- सामाजिक और धार्मिक सुधार

### ब्रह्म समाज

1. **राजा राममोहन राय** द्वारा स्थापित।
2. आत्मीय सभा (1814) बाद में 1828 में ब्रह्म समाज बना।
3. सती प्रथा, बहुविवाह और मूर्तिपूजा का विरोध किया।
4. महिलाओं के अधिकारों और आधुनिक शिक्षा का समर्थन किया।
5. एकेश्वरवाद का प्रचार किया।
6. 1829 में **सती प्रथा** समाप्त की गई।

### बाद के नेता

1. **देवेन्द्रनाथ टैगोर** ने समाज का संगठन और विस्तार किया।
2. **केशवचन्द्र सेन** ने इसे अधिक उग्र बनाया।
3. 1866 में ब्रह्म समाज का विभाजन आदि ब्रह्म समाज और ब्रह्म समाज ऑफ इंडिया में हु

### ईश्वरचन्द्र विद्यासागर

1. महिलाओं की शिक्षा का समर्थन किया।
2. बाल विवाह और बहुविवाह का विरोध किया।
3. विधवा पुनर्विवाह का समर्थन किया।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

4. 1856 में विधवा पुनर्विवाह अधिनियम पारित हुआ।

## रामकृष्ण मिशन

1. 1897 में **स्वामी विवेकानन्द** द्वारा स्थापित।
2. स्वामी रामकृष्ण **परमहंस** से प्रेरित।
3. धर्म की सार्वभौमिकता का प्रचार किया।
4. जातिगत कठोरता और सामाजिक बुराइयों का विरोध किया।
5. आध्यात्मिक हिन्दू धर्म और सामाजिक सेवा पर बल दिया।

## पश्चिमी भारत में सुधार आंदोलन

1. प्रमुख सुधारक: के. टी. तेलंग, आर. जी. भांडारकर, एम. जी. रानाडे।
2. **प्रार्थना समाज (1867)** ने एकेश्वरवाद और सामाजिक सुधार को बढ़ावा दिया।
3. जाति प्रथा और पुरोहितवादी वर्चस्व का विरोध किया।
4. विधवा पुनर्विवाह और महिलाओं की शिक्षा का समर्थन किया।

## आर्य समाज

1. 1875 में स्वामी **दयानन्द सरस्वती** द्वारा स्थापित।
2. वेदों की शिक्षाओं पर आधारित।
3. मूर्तिपूजा, जातिगत कठोरता और बाल विवाह का विरोध किया।
4. हिन्दी भाषा और वैदिक शिक्षा का समर्थन किया।
5. पुनः धर्मांतरण हेतु **शुद्धि आंदोलन** चलाया।
6. 1893 में डी.ए.वी. समूह और गुरुकुल समूह में विभाजित हुआ।

## मुस्लिमों में सुधार आंदोलन

1. मुगल शासन के पतन के बाद मुस्लिमों में गिरावट आई।
2. **फरायजी आंदोलन** ने धार्मिक शुद्धिकरण पर बल दिया।
3. **देवबंद** आंदोलन ने इस्लामी शिक्षा पर ध्यान केंद्रित किया।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

4. **सर सैयद अहमद खान** ने आधुनिक सुधार आंदोलन का नेतृत्व किया।
5. 1875 में अलीगढ़ में **मोहम्मडन एंग्लो-ओरिएंटल कॉलेज** की स्थापना की।
6. आधुनिक शिक्षा और वैज्ञानिक दृष्टिकोण को प्रोत्साहित किया।

## सुधार आंदोलनों का प्रभाव

1. आधुनिक मध्यवर्ग के विकास में सहायता मिली।
2. सामाजिक बुराइयों के प्रति जागरूकता फैली।
3. महिलाओं की स्थिति में सुधार हुआ।
4. शिक्षा और तार्किक सोच को प्रोत्साहन मिला।
5. कुछ हद तक सांप्रदायिक ध्रुवीकरण भी हुआ।

## भारत में पश्चिमी शिक्षा का उदय

### 1813 का चार्टर अधिनियम

1. कंपनी को प्रतिवर्ष एक लाख रुपये शिक्षा पर खर्च करने का निर्देश दिया गया।
2. मिशनरियों को शिक्षा फैलाने की अनुमति दी गई।

### मैकॉले और अंग्रेजी शिक्षा

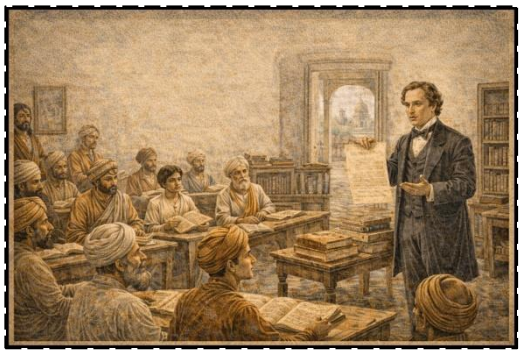

1. **टी. बी. मैकॉले ने** अंग्रेजी शिक्षा का समर्थन किया।
2. 1835 के मैकॉले मिनट ने पाश्चात्य ज्ञान को बढ़ावा दिया।
3. अधोमुखी निस्पंदन सिद्धांत प्रस्तुत किया।
4. उद्देश्य था अंग्रेजी-शिक्षित भारतीयों का एक वर्ग तैयार करना।

### वुड का डिस्पैच (1854)

1. आधुनिक शिक्षा प्रणाली की आधारशिला रखी।
2. उच्च शिक्षा के लिए अंग्रेजी और जनसाधारण के लिए देशी भाषाओं की सिफारिश की।
3. 1857 में कलकत्ता, बम्बई और मद्रास में विश्वविद्यालय स्थापित करने का प्रस्ताव किया।
4. महिलाओं की शिक्षा और शिक्षक प्रशिक्षण का समर्थन किया।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

### हंटर आयोग (1882)

1. शिक्षा की प्रगति की समीक्षा की।
2. प्राथमिक शिक्षा पर बल दिया।
3. व्यावसायिक और व्यावहारिक शिक्षा को प्रोत्साहित किया।

### भारत में प्रेस का विकास

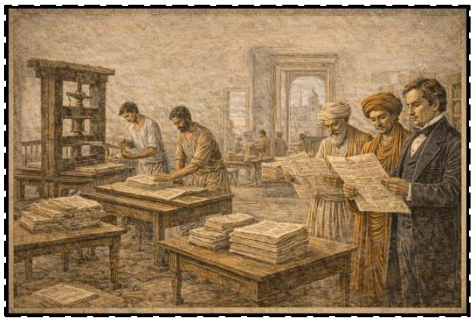

1. पहला समाचारपत्र: **बंगाल गजट (1780)**।
2. प्रेस ने नए विचारों और जागरूकता का प्रसार किया।
3. ब्रिटिशों ने प्रेस पर प्रतिबंध लगाए।
4. **1799 का प्रेस अधिनियम (सेंसरशिप)** कठोर नियंत्रण लागू करता था।
5. **1835 के मेटकाफ अधिनियम** ने प्रेस को स्वतंत्रता दी।
6. **1878 का वर्नाक्युलर प्रेस अधिनियम** भारतीय भाषा के समाचारपत्रों को दबाने के लिए था।
7. 1882 में **लॉर्ड रिपन** ने इस अधिनियम को समाप्त किया।

# TOP 5 QUESTIONS

**प्रश्न-1. सामाजिक सुधार में ब्रह्म समाज की भूमिका स्पष्ट कीजिए।**

**उत्तर-** ब्रह्म समाज ने सती प्रथा, बहुविवाह और जाति भेद जैसी सामाजिक बुराइयों को दूर करने का प्रयास किया। इसने महिलाओं के अधिकार, एकेश्वरवाद और आधुनिक शिक्षा का समर्थन किया तथा सामाजिक जागरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

**प्रश्न-2. भारतीय समाज में आर्य समाज के योगदान की चर्चा कीजिए।**

**उत्तर-** आर्य समाज ने मूर्तिपूजा, जातिगत कठोरता और बाल विवाह का विरोध किया। इसने वैदिक मूल्यों, हिन्दी भाषा, महिलाओं की शिक्षा और सामाजिक समानता को बढ़ावा दिया तथा सामाजिक सुधार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

**प्रश्न-3. मुस्लिम सुधार आंदोलन में सर सैयद अहमद खान की भूमिका का परीक्षण कीजिए।**

**उत्तर-** सर सैयद अहमद खान ने मुसलमानों के लिए आधुनिक शिक्षा पर बल दिया। उन्होंने अलीगढ़ में मोहम्मडन एंग्लो-ओरिएंटल कॉलेज की स्थापना की और वैज्ञानिक दृष्टिकोण तथा आधुनिक विचारों को प्रोत्साहित किया।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

**प्रश्न-4. भारत में अंग्रेजी शिक्षा के प्रसार में मैकॉले की भूमिका क्या थी?**

**उत्तर-** मैकॉले ने पाश्चात्य ज्ञान के प्रसार हेतु अंग्रेजी शिक्षा का समर्थन किया। 1835 के उनके मिनट ने आधुनिक शिक्षा प्रणाली की नींव रखी और अंग्रेजी-शिक्षित भारतीयों का एक वर्ग तैयार करने का उद्देश्य रखा।

**प्रश्न-5. भारत में सामाजिक परिवर्तनों में प्रेस के विकास का क्या योगदान था?**

**उत्तर-** प्रेस ने जागरूकता और नए विचारों का प्रसार किया। इसने सामाजिक बुराइयों की आलोचना की, राष्ट्रवाद को बढ़ावा दिया और ब्रिटिश प्रतिबंधों के बावजूद जनमत निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

# 7

# कंपनी शासन का जन विरोध

## परिचय

ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के शासन के प्रारंभिक काल में व्यापक जन-प्रतिरोध देखने को मिला। 1750 के दशक से 1857 तक ब्रिटिश औपनिवेशिक नीतियों ने किसानों, आदिवासियों और कारीगरों को गंभीर कठिनाइयों में डाल दिया। भूमि राजस्व की उच्च मांग, जमींदारों और साहूकारों द्वारा शोषण तथा स्थानीय उद्योगों के विनाश ने अनेक जन-विद्रोहों को जन्म दिया। 1857 का विद्रोह सबसे महत्वपूर्ण था क्योंकि इसने भारतीय समाज के विभिन्न वर्गों को ब्रिटिश शासन के विरुद्ध एकजुट किया।

## जनविद्रोह की परिस्थितियाँ

1. ब्रिटिश शासन ने भारत को ब्रिटिश हितों की पूर्ति करने वाली एक उपनिवेश में बदल दिया।
2. भूमि को विक्रेय संपत्ति बना दिया गया और निजी स्वामित्व को मान्यता दी गई।
3. कृषकों और राज्य के बीच जमींदार जैसे मध्यस्थ उभरे।
4. खाद्यान्न फसलों के स्थान पर वाणिज्यिक फसलें उगाई जाने लगीं।
5. भारी करों ने किसानों पर बोझ बढ़ाया।
6. व्यापारियों और साहूकारों ने कृषकों का शोषण किया।
7. भारत से इंग्लैंड को धन का निर्यात बढ़ा।
8. ब्रिटिश निर्मित वस्तुओं के कारण स्थानीय उद्योगों का पतन हुआ।
9. आदिवासियों के पारंपरिक भूमि अधिकार समाप्त हुए।
10. ब्रिटिश अधिकारियों, जमींदारों और साहूकारों की मिलीभगत ने किसानों का शोषण किया।
11. 1770 का बंगाल अकाल औपनिवेशिक नीतियों के कठोर प्रभाव को उजागर करता है।
12. इन सभी कारणों से व्यापक असंतोष और विद्रोह उत्पन्न हुए।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

## प्रमुख जन-विद्रोह

### (i) कृषक विद्रोह

1. बंगाल में सन्यासियों और फकीरों ने बेदखली और अकाल के कारण विद्रोह किया।
2. उन्होंने कोषागारों पर आक्रमण किए और गरीबों की सहायता की।
3. बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय के **'आनंदमठ'** में इस विद्रोह का उल्लेख मिलता है।
4. 1783 में रंगपुर और दिनाजपुर के किसानों ने राजस्व ठेकेदार देवी सिंह के विरुद्ध विद्रोह किया।
5. किसानों ने सरकारी कार्यालयों पर आक्रमण किया और राजस्व देना बंद कर दिया।
6. दक्षिण भारत में तमिलनाडु, मालाबार और आंध्र में पॉलिगरों ने विद्रोह किया।
7. **मालाबार** में मापिला विद्रोह अत्यधिक कर और बेदखली के विरुद्ध था।
8. 1824 में पश्चिमी उत्तर प्रदेश और हरियाणा में जाटों ने विद्रोह किया।
9. गुजरात में कोलियों ने विद्रोह किया।

### (ii) आदिवासी विद्रोह

1. औपनिवेशिक शासन आदिवासी क्षेत्रों में प्रवेश कर उनकी स्वायत्तता को नष्ट कर रहा था।
2. खानदेश के भील और सिंहभूम के कोल विद्रोह में शामिल हुए।
3. आदिवासियों ने साहूकारों और अधिकारियों जैसे बाहरी लोगों पर आक्रमण किया।
4. **संथाल विद्रोह** बंगाल-बिहार-उड़ीसा क्षेत्र में हुआ।
5. **सिद्धू और कान्हू** इसके प्रमुख नेता थे।
6. उनका उद्देश्य भूमि पुनः प्राप्त करना और स्वशासन स्थापित करना था।
7. सभी आदिवासी विद्रोहों को कठोरता से दबा दिया गया।

## प्रारंभिक प्रतिरोध का स्वरूप और महत्व

1. विद्रोही अपने शत्रुओं और शोषण के प्रति सजग थे।
2. स्थानीय शिकायतें धीरे-धीरे ब्रिटिश शासन के विरोध में परिवर्तित हुईं।
3. धर्म, परंपरा और जातीय संबंधों ने लोगों को संगठित करने में सहायता की।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

4. ब्रिटिशों ने इन विद्रोहों को कानून-व्यवस्था की समस्या बताया।
5. विद्रोहियों का उद्देश्य नई व्यवस्था स्थापित करना नहीं, बल्कि पुरानी व्यवस्था को पुनः स्थापित करना था।
6. सीमाओं के बावजूद इन विद्रोहों ने औपनिवेशिक शासन के शोषणकारी स्वरूप को उजागर किया।

## 1857 का विद्रोह : कारण और घटनाक्रम

### विद्रोह के कारण

**(A) आर्थिक कारण**

1. शोषणकारी भूमि राजस्व व्यवस्थाएँ।
2. स्वदेशी उद्योगों का विनाश।
3. किसानों, कारीगरों और तालुकेदारों की कठिनाइयाँ।

**(B) सामाजिक और धार्मिक कारण**

1. रीति-रिवाजों और परंपराओं में ब्रिटिश हस्तक्षेप।
2. सती प्रथा के उन्मूलन और विधवा पुनर्विवाह अधिनियम से भय की भावना।
3. ईसाई धर्म में परिवर्तन की आशंका।

**(B) सैनिक कारण**

1. भारतीय सिपाहियों को कम वेतन और भेदभाव।
2. खराब सेवा-शर्तें और पदोन्नति के अवसरों का अभाव।
3. एनफील्ड राइफल की कारतूसों पर गाय और सूअर की चर्बी होने से धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुँची।

### विद्रोह का घटनाक्रम

1. मार्च 1857 में मंगल पांडे द्वारा बैरकपुर में विद्रोह का प्रारंभ।
2. 10 मई 1857 को मेरठ में व्यापक विद्रोह।
3. विद्रोही दिल्ली पहुँचे और बहादुर शाह द्वितीय को अपना नेता घोषित किया।
4. विद्रोह अवध, कानपुर, लखनऊ, झाँसी, ग्वालियर और बिहार तक फैल गया।
5. प्रमुख नेता: रानी लक्ष्मीबाई, तांत्या टोपे, नाना साहेब, बेगम हजरत महल, कुंवर सिंह।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

6. किसानों, कारीगरों, तालुकेदारों और सिपाहियों ने व्यापक रूप से भाग लिया।

## 1857 के विद्रोह का स्वरूप और परिणाम

### स्वरूप

1. ब्रिटिश इतिहासकारों ने इसे सिपाही विद्रोह कहा।
2. राष्ट्रवादी इतिहासकारों ने इसे प्रथम स्वतंत्रता संग्राम माना।
3. नवीन अध्ययनों में जनसहभागिता पर बल दिया गया है।
4. यह किसानों और सिपाहियों की व्यापक भागीदारी वाला जन-विद्रोह था।

### असफलता के कारण

1. हथियारों और गोला-बारूद की कमी।
2. केंद्रीकृत नेतृत्व का अभाव।
3. ब्रिटिशों के श्रेष्ठ सैन्य संसाधन।
4. स्पष्ट राजनीतिक कार्यक्रम का अभाव।
5. राजाओं और शिक्षित वर्ग का पर्याप्त समर्थन नहीं मिला।

### महत्व

1. ब्रिटिश शासन के विरुद्ध गहरा असंतोष उजागर हुआ।
2. ब्रिटिशों ने 'फूट डालो और राज करो' की नीति अपनाई।
3. सेना में भर्ती जाति और समुदाय के आधार पर की जाने लगी।
4. **1858 के भारत शासन अधिनियम से कंपनी शासन समाप्त हुआ।**
5. प्रशासन ब्रिटिश क्राउन को सौंप दिया गया।
6. इस विद्रोह ने भविष्य के राष्ट्रीय आंदोलन को प्रेरणा दी।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

# TOP 5 QUESTIONS

**Q-1. 1857 से पूर्व हुए जन-विद्रोहों के प्रमुख कारण क्या थे?**

**उत्तर-** भारी भूमि राजस्व, जमींदारों और साहूकारों द्वारा शोषण, स्थानीय उद्योगों का विनाश, आदिवासी भूमि अधिकारों की हानि और औपनिवेशिक प्रशासन की अन्यायपूर्ण नीतियाँ जन-विद्रोहों के प्रमुख कारण थे।

**Q-2. ब्रिटिश शासन के विरुद्ध किसी दो कृषक या आदिवासी विद्रोहों का वर्णन कीजिए।**

**उत्तर-** बंगाल का सन्यासी विद्रोह अकाल और बेदखली के कारण हुआ, जबकि संथाल विद्रोह जमींदारों और साहूकारों के शोषण के विरुद्ध था। दोनों का उद्देश्य न्याय की स्थापना था, परंतु उन्हें दबा दिया गया।

**Q-3. 1857 के विद्रोह के कारण स्पष्ट कीजिए।**

**उत्तर-** 1857 का विद्रोह आर्थिक शोषण, सामाजिक और धार्मिक हस्तक्षेप, सिपाहियों की सैन्य असंतुष्टि तथा एनफील्ड राइफल की कारतूसों के कारण उत्पन्न हुआ, जिससे धार्मिक भावनाएँ आहत हुईं।

**Q-4. 1857 के विद्रोह के स्वरूप पर चर्चा कीजिए।**

**उत्तर-** 1857 का विद्रोह केवल सिपाही विद्रोह नहीं था, बल्कि किसानों, कारीगरों और स्थानीय नेताओं की व्यापक भागीदारी वाला जन-आंदोलन था। यह ब्रिटिश शासन के विरुद्ध व्यापक असंतोष की अभिव्यक्ति था।

**Q-5. 1857 के विद्रोह का महत्व क्या था?**

**उत्तर-** इस विद्रोह से कंपनी शासन का अंत हुआ और सत्ता ब्रिटिश क्राउन को हस्तांतरित की गई। इसने औपनिवेशिक शासन के शोषणकारी स्वरूप को उजागर किया और भविष्य के राष्ट्रवादी आंदोलनों को प्रेरणा दी।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

# 8
# राष्ट्रवाद

## परिचय

राष्ट्रवाद का अर्थ है अपने देश के प्रति निष्ठा और समर्पण। राष्ट्रवाद का विचार बहुत प्राचीन नहीं है, बल्कि यह मुख्यतः पिछले लगभग 200 वर्षों में विकसित हुआ। जहाँ राष्ट्रवाद का उदय आधुनिक यूरोप में हुआ, वहीं भारत में यह भिन्न परिस्थितियों में विकसित हुआ। भारत में राष्ट्रवाद मुख्यतः ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के विरुद्ध प्रतिक्रिया के रूप में उभरा और धीरे-धीरे स्वतंत्रता संग्राम का आधार बना।

## राष्ट्रवाद की उत्पत्ति और अर्थ

1. राष्ट्रवाद का इतिहास लगभग 200 वर्ष पुराना है।
2. आधुनिक राष्ट्रवाद की अवधारणा का उदय **यूरोप** में हुआ, भारत में नहीं।
3. यह **औद्योगिक क्रांति** और आधुनिक अर्थव्यवस्था के कारण विकसित हुआ।
4. औद्योगीकरण के कारण निम्न आवश्यकताएँ उत्पन्न हुईं:
    - बड़े बाज़ार
    - राजनीतिक एकीकरण
    - समान शिक्षा व्यवस्था
    - एक समान भाषा
5. इसके परिणामस्वरूप इंग्लैंड, फ्रांस और जर्मनी जैसे **राष्ट्र-राज्यों** का उदय हुआ।
6. लोग स्वयं को एक राष्ट्र के सदस्य के रूप में पहचानने लगे।
7. राष्ट्रवाद का अर्थ राष्ट्र-राज्य और उसकी संस्कृति के प्रति निष्ठा था।

## भारत में राष्ट्रवाद

1. भारत की परिस्थितियाँ यूरोप से भिन्न थीं।
2. भारत मुख्यतः कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था था।
3. यहाँ अनेक भाषाएँ, संस्कृतियाँ और परंपराएँ थीं।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

4. देशभक्ति की भावना थी, परंतु आधुनिक अर्थ में **राष्ट्रवाद नहीं** था।
5. भारतीय राष्ट्रवाद मुख्यतः **ब्रिटिश शासन के विरुद्ध प्रतिक्रिया** के रूप में उभरा।
6. भारतीय राष्ट्रवाद का सार था:
    - ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन का विरोध
    - विविधता के बावजूद भारतीयों की एकता

## संस्कृति और राष्ट्रवाद

भारतीय राष्ट्रवाद की प्रारंभिक अभिव्यक्ति सांस्कृतिक क्षेत्र में हुई।

## सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के दो स्तर

### (i) भारतीय समाज का सुधार

1. भारतीय नेताओं ने सामाजिक बुराइयों पर प्रश्न उठाए, जैसे:
    - जाति प्रथा
    - अंधविश्वास
    - महिलाओं के प्रति भेदभाव
2. **राजा राममोहन राय** ने सती प्रथा का विरोध किया।
3. **ईश्वरचन्द्र विद्यासागर** ने विधवा पुनर्विवाह का समर्थन किया।
4. **ज्योतिबा फुले** ने जातिगत भेदभाव का विरोध किया।
5. सुधारकों का विश्वास था कि भारतीय समाज आधुनिक और तार्किक बने।

### (ii) औपनिवेशिक सांस्कृतिक प्रभुत्व का विरोध

1. पश्चिमी संस्कृति थोपने के ब्रिटिश प्रयासों का विरोध किया गया।
2. भारतीय नेताओं ने भारतीय परंपराओं और सांस्कृतिक प्रथाओं की रक्षा की।
3. केशवचन्द्र सेन और विद्यासागर ने जबरन पाश्चात्यीकरण का विरोध किया।
4. सुधारक भारतीय संस्कृति को **आधुनिक बनाना चाहते थे, परंतु पाश्चात्य** नहीं।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

## सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का सार

1. भारतीय संस्कृति की सामाजिक बुराइयों का परित्याग।
2. ब्रिटिश सांस्कृतिक प्रभुत्व का प्रतिरोध।
3. सुधार और सांस्कृतिक आत्मसम्मान का समन्वय।

## आर्थिक राष्ट्रवाद

1. इसका विकास 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में हुआ।
2. दादाभाई नौरोजी, आर.सी. दत्त और एम.जी. रानाडे ने आर्थिक शोषण को उजागर किया।
3. ब्रिटिश शासन द्वारा भारत का आर्थिक शोषण किया गया:
    - भारी भूमि कर
    - असमान व्यापार
    - हस्तशिल्प का विनाश
    - भारत को कच्चे माल का आपूर्तिकर्ता बनाना

4. भारतीय उद्योगों का पतन हुआ और गरीबी बढ़ी।

## 'धन निकासी सिद्धांत'

1. **दादाभाई नौरोजी** द्वारा प्रतिपादित।
2. इसने भारत की संपत्ति के निरंतर इंग्लैंड स्थानांतरण को स्पष्ट किया।
3. संपत्ति का निकास निम्न माध्यमों से हुआ:
    - व्यापारिक लाभ
    - ब्रिटिश अधिकारियों का वेतन
    - औद्योगिक शोषण

4. यह निकास भारत की कुल बचत का लगभग एक-तिहाई था।

## आर्थिक राष्ट्रवाद का महत्व

1. इसने ब्रिटिश 'कल्याणकारी शासन' के मिथक को उजागर किया।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

2. औपनिवेशिक शोषण के प्रति जागरूकता बढ़ाई।
3. व्यापक राष्ट्रीय आंदोलन की नींव रखी।
4. स्वराज की मांग को जन्म दिया।

## धर्म और राष्ट्रवाद

1. कुछ नेताओं ने धर्म को राष्ट्रवाद का आधार बनाया।
2. प्रमुख नेता:
   - **बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय**
   - **दयानन्द सरस्वती**
   - **स्वामी विवेकानन्द**
   - **अरविन्द घोष**
3. उनका विश्वास था कि भारतीय सभ्यता आध्यात्मिक रूप से श्रेष्ठ है।
4. ब्रिटिश शासन को सांस्कृतिक और आध्यात्मिक प्रभुत्व के रूप में देखा गया।

## धर्म की भूमिका

1. भारतीय समाज में धर्म एक शक्तिशाली तत्व था।
2. **बाल गंगाधर तिलक** ने 1893 में गणपति उत्सव प्रारंभ किया।
3. धार्मिक प्रतीकों ने जनसमूह तक पहुँचने में सहायता की।
4. गांधीजी ने सभी धर्मों के प्रतीकों का उपयोग कर एकता को बढ़ावा दिया।

## दो प्रवृत्तियाँ

1. समावेशी राष्ट्रवाद – गांधीजी का दृष्टिकोण।
2. विशिष्ट राष्ट्रवाद – हिन्दू महासभा और मुस्लिम लीग का दृष्टिकोण।
3. समावेशी राष्ट्रवाद ने राष्ट्रीय एकता को सुदृढ़ किया।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

# टॉप 5 प्रश्न

**प्रश्न-1. यूरोप में राष्ट्रवाद का उदय कैसे हुआ?**

**उत्तर-** यूरोप में औद्योगीकरण के कारण बड़े बाज़ार, राजनीतिक एकीकरण, समान शिक्षा और सामान्य भाषा की आवश्यकता उत्पन्न हुई। इससे राष्ट्र-राज्यों का उदय हुआ और उनके प्रति निष्ठा की भावना विकसित हुई।

**प्रश्न-2. भारतीय राष्ट्रवाद यूरोपीय राष्ट्रवाद से किस प्रकार भिन्न था?**

**उत्तर-** यूरोपीय राष्ट्रवाद औद्योगीकरण के परिणामस्वरूप विकसित हुआ, जबकि भारतीय राष्ट्रवाद ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के विरुद्ध प्रतिक्रिया के रूप में उभरा। भारतीय राष्ट्रवाद का मुख्य उद्देश्य विदेशी शासन का विरोध और राष्ट्रीय एकता था।

**प्रश्न-3. भारत में सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का सार क्या था?**

**उत्तर-** सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का उद्देश्य भारतीय समाज की बुराइयों को दूर करना तथा ब्रिटिश सांस्कृतिक प्रभुत्व का विरोध करना था। इसमें सुधार और सांस्कृतिक आत्मसम्मान का समन्वय था।

**प्रश्न-4. आर्थिक राष्ट्रवाद और 'धन निकासी सिद्धांत' की व्याख्या कीजिए।**

**उत्तर-** आर्थिक राष्ट्रवाद ने ब्रिटिश आर्थिक शोषण को उजागर किया। दादाभाई नौरोजी के 'धन निकासी सिद्धांत' ने बताया कि भारत की संपत्ति निरंतर इंग्लैंड भेजी जा रही थी, जिससे भारत में गरीबी बढ़ी और ब्रिटेन समृद्ध हुआ।

**प्रश्न-5. भारत में राष्ट्रवाद के विकास में धर्म की क्या भूमिका थी?**

**उत्तर-** धर्म ने राष्ट्रवाद को नैतिक और भावनात्मक आधार प्रदान किया। विवेकानन्द और तिलक जैसे नेताओं ने धार्मिक विचारों और प्रतीकों के माध्यम से जनसामान्य को संगठित किया और राष्ट्रीय चेतना का प्रसार किया।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

# 9
# भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन

## परिचय

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन कोई एक घटना नहीं था, बल्कि कई दशकों तक चला एक लंबा संघर्ष था। इसमें विभिन्न धाराएँ सम्मिलित थीं, जैसे उदारवादियों के प्रयास, उग्रवादी राजनीति, क्रांतिकारी आंदोलन तथा महात्मा गांधी के नेतृत्व में जन-आंदोलन। इन सभी धाराओं ने परस्पर प्रभाव डाला और अंततः 1947 में भारत की स्वतंत्रता का मार्ग प्रशस्त किया।

## भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस और प्रारंभिक राष्ट्रवादी

1. भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना **दिसंबर 1885** में हुई।
2. **ए.ओ. ह्यूम,** जो एक सेवानिवृत्त ब्रिटिश आई.सी.एस. अधिकारी थे, ने इसकी स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
3. प्रारंभिक नेताओं में दादाभाई नौरोजी, फिरोजशाह मेहता, बदरुद्दीन तैयबजी और सुरेन्द्रनाथ बनर्जी शामिल थे।
4. कांग्रेस की स्थापना से पहले भी कई क्षेत्रीय राजनीतिक संगठन कार्यरत थे।
5. प्रारंभिक राष्ट्रवादियों को **उदारवादी** कहा जाता है।

## प्रारंभिक राष्ट्रवादियों की मुख्य माँगें

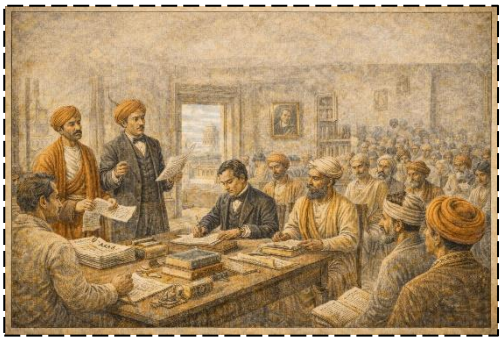

1. भूमि कर और अन्य करों में कमी।
2. सिविल सेवाओं का भारतीयकरण।
3. विधान परिषदों का विस्तार।
4. भारतीय उद्योगों का संरक्षण।
5. वर्नाक्युलर प्रेस एक्ट जैसे दमनकारी कानूनों का विरोध।

## उदारवादियों का योगदान

1. राजनीतिक चेतना का विकास किया।
2. ब्रिटिश शासन की आर्थिक आलोचना प्रस्तुत की।
3. भारतीय अर्थव्यवस्था के शोषण को उजागर किया।
4. राष्ट्रीय चेतना की नींव रखी।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

## स्वदेशी और बहिष्कार : उग्रवादी राजनीति

1. **1905 में लॉर्ड कर्जन** ने बंगाल विभाजन की घोषणा की।
2. यह विभाजन धार्मिक आधार पर किया गया था।
3. बंगाल में व्यापक विरोध हुआ।
4. **स्वदेशी और बहिष्कार आंदोलन** प्रारंभ किया गया।
5. ब्रिटिश वस्तुओं का बहिष्कार और भारतीय वस्तुओं का प्रचार किया गया।
6. **बाल गंगाधर तिलक, बिपिन चन्द्र पाल और लाला लाजपत राय** उग्रवादी नेता के रूप में उभरे।
7. नए तरीकों का उपयोग किया गया:
    - जनसभाएँ
    - विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार
    - उत्सवों और गीतों का प्रयोग
8. 1911 में बंगाल विभाजन रद्द कर दिया गया।

## क्रांतिकारी आंदोलन का प्रथम चरण (भारत और विदेश में)

1. **1907 के सूरत अधिवेशन** में उदारवादी और उग्रवादियों के बीच विभाजन हुआ।
2. क्रांतिकारियों का विश्वास था कि ब्रिटिश शासन को बलपूर्वक हटाया जाना चाहिए।
3. **अनुशीलन समिति और युगांतर** जैसी गुप्त संस्थाएँ बनीं।
4. **खुदीराम बोस और प्रफुल्ल चाकी** प्रारंभिक क्रांतिकारी थे।
5. क्रांतिकारी गतिविधियाँ पंजाब, उत्तर प्रदेश और विदेशों तक फैलीं।
6. 1913 में अमेरिका में **सोहन सिंह भकना** द्वारा **गदर आंदोलन** प्रारंभ किया गया।
7. **1914 की कोमागाटा मारू** घटना से ब्रिटिश शासन के प्रति आक्रोश बढ़ा।
8. दमन के कारण अधिकांश क्रांतिकारी प्रयास असफल रहे।

## होमरूल आंदोलन

1. यह आंदोलन प्रथम विश्व युद्ध के दौरान प्रारंभ हुआ।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

2. इसके प्रमुख नेता **बाल गंगाधर तिलक और एनी बेसेंट** थे।
3. 1916 में तिलक ने होमरूल लीग की स्थापना की।
4. एनी बेसेंट ने अखिल भारतीय स्तर पर दूसरी लीग प्रारंभ की।
5. उद्देश्य था ब्रिटिश साम्राज्य के भीतर स्वशासन प्राप्त करना।
6. भाषणों और पत्रकों के माध्यम से राजनीतिक जागरूकता फैलाई गई।
7. 1918 के बाद यह आंदोलन कमजोर पड़ गया।

## गांधीवादी जन-आंदोलन : प्रारंभिक वर्ष

1. महात्मा गांधी **1915** में भारत लौटे।
2. उन्होंने अहिंसा पर आधारित **सत्याग्रह** की पद्धति अपनाई।

## प्रारंभिक आंदोलन

1. **चम्पारण आंदोलन (1917)**– नील की खेती के विरुद्ध।
2. **अहमदाबाद मिल हड़ताल**– मजदूरों के वेतन के लिए।
3. **खेड़ा आंदोलन**– राजस्व माफी की मांग।
4. इन आंदोलनों ने गांधी को जननेता के रूप में स्थापित किया।

## रॉलेट सत्याग्रह (1919)

1. रॉलेट एक्ट के अंतर्गत बिना मुकदमे के गिरफ्तारी की अनुमति थी।
2. इसके विरोध में देशव्यापी आंदोलन हुआ।
3. **1919 में जलियांवाला बाग हत्याकांड** हुआ।
4. इस घटना ने राष्ट्र को झकझोर दिया और राष्ट्रवाद को तीव्र किया।

## असहयोग आंदोलन

1. **1920** में गांधी के नेतृत्व में प्रारंभ हुआ।
2. खिलाफत आंदोलन का समर्थन प्राप्त था।
3. कार्यक्रम में शामिल थे:

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

- स्कूलों, अदालतों और परिषदों का बहिष्कार
- विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार
- खादी का प्रचार

4. वकील, विद्यार्थी और शिक्षक सक्रिय रूप से जुड़े।
5. **1922 में चौरी-चौरा** की हिंसक घटना के बाद आंदोलन वापस ले लिया गया।

## क्रांतिकारी आंदोलन : पुनर्गठन और पुनर्निर्देशन

1. असहयोग आंदोलन की वापसी के बाद क्रांतिकारी गतिविधियाँ पुनः सक्रिय हुईं।
2. **हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन (HRA) का गठन हुआ।**
3. **1925 का काकोरी षड्यंत्र प्रमुख घटना थी।**
4. बाद में इसका नाम **हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन (HSRA)** रखा गया।
5. **भगत सिंह और चन्द्रशेखर आज़ाद** जैसे नेताओं ने समाजवादी विचारधारा अपनाई।

## साइमन कमीशन का बहिष्कार

1. 1927 में साइमन कमीशन नियुक्त किया गया।
2. इसमें कोई **भारतीय सदस्य नहीं** था।
3. सभी दलों ने इसका बहिष्कार किया।
4. नारा दिया गया – "साइमन वापस जाओ।"
5. **लाला लाजपत राय** लाठीचार्ज में घायल हुए और बाद में उनका निधन हुआ।
6. कांग्रेस ने पूर्ण स्वराज को अपना लक्ष्य घोषित किया।

## सविनय अवज्ञा आंदोलन

1. **1930 में दांडी** यात्रा से प्रारंभ हुआ।
2. गांधी ने दांडी पहुँचकर नमक कानून तोड़ा।
3. आंदोलन पूरे देश में फैल गया।
4. महिलाओं ने बड़ी संख्या में भाग लिया।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

5. सरकार ने दमनकारी कदम उठाए।
6. **1931 के गांधी-इरविन समझौते** से अस्थायी स्थगन हुआ।
7. 1934 में आंदोलन अंततः समाप्त हुआ।

## उग्र आंदोलनों की तीव्रता और वामपंथ का उदय

1. 1930–34 के बीच क्रांतिकारी गतिविधियाँ बढ़ीं।
2. सूर्य सेन के नेतृत्व **में चिटगाँव शस्त्रागार** कांड हुआ।
3. समाजवादी विचारधारा लोकप्रिय हुई।
4. **1920 में भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना हुई।**
5. जवाहरलाल नेहरू और सुभाषचन्द्र बोस जैसे नेता समाजवाद से प्रभावित हुए।

## संवैधानिक सुधार और कांग्रेस की भागीदारी

1. **1935 के भारत शासन अधिनियम** से प्रांतीय स्वायत्तता दी गई।
2. **1937** में चुनाव हुए।
3. अधिकांश प्रांतों में कांग्रेस की सरकार बनी।
4. कांग्रेस मंत्रिमंडलों ने जनकल्याण के कार्य किए।
5. 1939 में भारत को द्वितीय विश्व युद्ध में शामिल करने के विरोध में मंत्रिमंडलों ने इस्तीफा दे दिया।

## स्वतंत्रता की ओर

1. 1942 में गांधी ने **'भारत छोड़ो आंदोलन'** प्रारंभ किया।
2. ब्रिटिशों ने बड़े पैमाने पर गिरफ्तारियाँ कीं।
3. इस आंदोलन से स्पष्ट हुआ कि ब्रिटिश अब भारत पर शासन नहीं कर सकते।
4. द्वितीय विश्व युद्ध के बाद सत्ता हस्तांतरण के लिए वार्ताएँ प्रारंभ हुईं।
5. **15 अगस्त 1947** को भारत स्वतंत्र हुआ।
6. स्वतंत्रता के साथ ही **भारत का विभाजन** हुआ, जिससे व्यापक हिंसा और पीड़ा हुई।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

# TOP 5 QUESTIONS

**प्रश्न-1. भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में प्रारंभिक राष्ट्रवादियों की भूमिका क्या थी?**

**उत्तर-** प्रारंभिक राष्ट्रवादियों ने राजनीतिक जागरूकता उत्पन्न की, ब्रिटिश आर्थिक नीतियों की आलोचना की और संवैधानिक सुधारों की मांग की। उन्होंने शांतिपूर्ण तरीकों से भारतीय राष्ट्रवाद की नींव रखी।

**प्रश्न-2. स्वदेशी और बहिष्कार आंदोलन का महत्व स्पष्ट कीजिए।**

**उत्तर-** स्वदेशी आंदोलन ने भारतीय वस्तुओं के उपयोग और ब्रिटिश वस्तुओं के बहिष्कार को बढ़ावा दिया। इसने जनसहभागिता को प्रोत्साहित किया और विरोध के नए तरीके अपनाकर राष्ट्रीय चेतना को सुदृढ़ किया।

**प्रश्न-3. 1922 में असहयोग आंदोलन क्यों वापस लिया गया?**

**उत्तर-** चौरी-चौरा की हिंसक घटना के बाद गांधी ने आंदोलन वापस ले लिया क्योंकि उनका विश्वास था कि आंदोलन पूर्णतः अहिंसक रहना चाहिए।

**प्रश्न-4. सविनय अवज्ञा आंदोलन का महत्व बताइए।**

**उत्तर-** सविनय अवज्ञा आंदोलन ने नमक कानून जैसे अन्यायपूर्ण कानूनों का शांतिपूर्ण उल्लंघन कर जनसहभागिता को व्यापक बनाया। इसने महिलाओं और युवाओं की भागीदारी बढ़ाई तथा ब्रिटिश शासन को कमजोर किया।

**प्रश्न-5. 1947 को विजय और त्रासदी का वर्ष क्यों कहा जाता है?**

**उत्तर-** 1947 में भारत को स्वतंत्रता प्राप्त हुई, जो एक महान उपलब्धि थी। परंतु विभाजन के कारण सांप्रदायिक हिंसा और जनहानि हुई, इसलिए यह वर्ष विजय के साथ-साथ त्रासदी का भी प्रतीक है।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/